वार्षिक रिपोर्ट
ANNUAL REPORT
2001-2002

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली
INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS
NEW DELHI

IGNCA

वार्षिक रिपोर्ट
ANNUAL REPORT
2001-2002

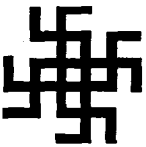

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली
INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS
NEW DELHI

विषय-सूची
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

			पृष्ठ संख्या
संकल्पना			1
न्यास का निर्माण			2
संगठन			2
वार्षिक प्रतिवेदन			4
कलानिधि			
कार्यक्रम क	:	संदर्भ पुस्तकालय	6
कार्यक्रम ख	:	राष्ट्रीय सूचना प्रणाली व डेटाबैंक	9
कार्यक्रम ग	:	सांस्कृतिक अभिलेखागार मैन्युस्क्रिप्ट मिशन	10
कलाकोश			
कार्यक्रम क	:	कलातत्त्वकोश	12
कार्यक्रम ख	:	कलामूलशास्त्र	13
कार्यक्रम ग	:	कलासमालोचन	14
कार्यक्रम ङ	:	क्षेत्र-अध्ययन	15
जनपद-सम्पदा			
कार्यक्रम क	:	मानवजाति वर्णनात्मक संग्रह	17
कार्यक्रम ख	:	बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियाँ एवं गतिविधियाँ	18
कार्यक्रम ग	:	जीवन-शैली अध्ययन	18
कार्यक्रम घ	:	क्षेत्र-सम्पदा	19
कार्यक्रम ङ	:	यूनेस्को प्रपीठ	20
कलादर्शन			
प्रदर्शनियाँ			21
फिल्म शो			22
बाल-कार्यक्रम			22
सार्वजनिक व्याख्यान/चर्चा			23
स्मारकीय व्याख्यान			23
अन्तर्विभागीय व्याख्यान			23
कार्यशालाएँ एवं संगोष्ठियाँ			23

सूत्रधार

कार्मिक	25
आपूर्ति एवं सेवाएँ	25
शाखा कार्यालय	25
क्षेत्रीय कार्यालय	25
वित्त एवं लेखा	26
न्यास की निधियों का निवेश	26
आवास	26
शोधवृत्ति योजनाएँ	27

साँस्कृतिक सूचना विज्ञान प्रयोगशाला **28**

अनुबन्ध

1.	:	इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास के सदस्य (31.03.2002 को)	31
2.	:	केन्द्र की कार्यकारिणी समिति के सदस्य (31.03.2002 को)	34
3.	:	केन्द्र के अधिकारियों की सूची (31.3.2002 को)	35
4.	:	केन्द्र के वरिष्ठ/कनिष्ठ अनुसंधान अध्येताओं की सूची (31.03.2002 को)	37
5.	:	अप्रैल, 2001 से मार्च, 2002 के दौरान केन्द्र में आयोजित व्याख्यान	38
6.	:	अप्रैल, 2001 से मार्च, 2002 के दौरान केन्द्र के प्रकाशन	41

CONTENTS
INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS

Concept	45
Formation of the Trust	46
Organisation	46
Annual Report for the Period	48

KALĀ NIDHI

Programme A : Reference Library	49
Programme B : National Information System and Data Bank	53
Programme C : Cultural Archives National Mission for Manuscripts	53

KALĀ KOŚA

Programme A : Kalātattvakośa	55
Programme B : Kalāmūlaśāstra	56
Programme C : Kalāsamālocana	57
Programme D : Area Studies	58

JANAPADA SAMPADĀ

Programme A : Ethnographic Collection	60
Programme B : Multimedia Presentation	60
Programme C : Lifestyle Studies	61
Programme D : Kṣetra Sampadā	62
Programme E : UNESCO Chair	63

KALĀ DARŚANA

Exhibitions	64
Film Shows	65
Children's Programme	65
Public Lectures/Discussions	65
Memorial Lectures	65
In House Lectures	66
Workshops and Seminars	66

SŪTRADHĀRA

Personnel 67
Services and Supply 67
Branch Offices 67
Regional Office 67
Finance and Accounts 67
Investment of Trust Funds 68
Housing 68
Fellowship Schemes 69

CULTURAL INFORMATICS LAB 70

ANNEXURES

I : Indira Gandhi National Centre for the Arts
Board of Trustees (as on 31.3.2002) 73

II : Indira Gandhi National Centre for the Arts
Members of Executive Committee (as on 31.3.2002) 76

III : List of officers of IGNCA (as on 31.3.2002) 77

IV : List of Senior Research Fellows/Junior Research
Fellows in IGNCA (as on 31.3.2002) 79

V : Lectures held in IGNCA during April 2001 to March 2002 80

VI : IGNCA Publications during April 2001 to March 2002 82

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
वार्षिक विवरण- 2001-2002

संकल्पना

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (इ.गाँ.रा.क.के.) श्रीमती इन्दिरा गाँधी की स्मृति में स्थापित एक ऐसी स्वायत्त संस्था के रूप में परिकल्पित है, जिसमें सभी कलाओं के अध्ययन एवं अनुभव का समावेश हो और कला का प्रत्येक रूप अपना एक पृथक अस्तित्व रखते हुए भी, पारस्परिक अन्योन्याश्रय की स्थिति में प्रकृति, सामाजिक संरचना और ब्रह्माण्ड व्यवस्था के साथ पारस्परिक रूप से सम्बद्ध हो।

कला विषयक यह दृष्टिकोण मानव संस्कृति के व्यापक परिवेश के साथ अखण्ड व अपरिहार्य रूप से सम्बद्ध है। यह श्रीमती गाँधी की इस मान्यता पर आधारित है कि वैयक्तिक एवं सामाजिक स्तर पर मनुष्य के अन्तर्भूत गुणों के समुचित विकास में, कलाओं की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह दृष्टिकोण एक ऐसी विश्वदृष्टि की भावना में समाविष्ट है जो अपने स्वरूप में समग्र है, भारतीय परम्परा में सर्वत्र मुखरित है और महात्मा गाँधी एवं रवीन्द्रनाथ ठाकुर प्रभृति आधुनिक मनीषियों ने जिस पर बल दिया है।

यहाँ कलाओं को बहुत व्यापक रूप में देखा गया है, जिसमें शामिल हैं- लिखित एवं मौखिक रूप में उपलब्ध सृजनात्मक व समीक्षात्मक साहित्य, वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला और लेखाचित्र से लेकर सामान्य भौतिक संस्कृति, फोटोग्राफी और फिल्म जैसी दृश्य कलाएँ, अपने व्यापकतम अर्थों में संगीत, नृत्य व नाट्य जैसी प्रदर्शनात्मक कलाएँ तथा मेलों, उत्सवों एवं जीवन शैली में विद्यमान वह सभी कुछ ,जिसे किसी भी दृष्टि से कलात्मक कहा जा सकता हो। प्रारम्भ में केन्द्र ने अपना ध्यान भारत पर ही केन्द्रित किया है पर भविष्य में इसके क्षेत्र का प्रसार अन्य सभ्यताओं एवं संस्कृतियों तक हो जाएगा । अनुसन्धान, प्रकाशन, प्रशिक्षण, सृजनात्मक कार्यकलाप तथा प्रदर्शन के विविध कार्यक्रमों के माध्यम से केन्द्र, कलाओं को प्राकृतिक तथा मानवीय परिवेश के सन्दर्भ में प्रस्तुत करने का प्रयास करेगा। अपने समस्त कार्यकलाप में केन्द्र का आधारभूत दृष्टिकोण बहुविषयक एवं अन्तर्विषयक होगा।

केन्द्र के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार हैं-

(1) लिखित, मौखिक एवं दृश्य स्रोत सामग्री के विशेष परिप्रेक्ष्य में, कलाओं के प्रमुख संसाधन केन्द्र के रूप में कार्य करना।

(2) कला,मानविकी, और सामान्य सांस्कृतिक धरोहर से संबंधित सन्दर्भ ग्रन्थों, शब्दावलियों, शब्दकोशों, विश्वकोशों आदि के अनुसन्धान एवं प्रकाशन का कार्य।

(3) सुव्यवस्थित वैज्ञानिक अध्ययन व सचल प्रदर्शनों के आयोजन हेतु क्रोड संग्रह के साथ-साथ जनजातीय एवं लोक कला प्रभाग स्थापित करना।

(4) प्रदर्शनों, प्रदर्शनियों, बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियों, सम्मेलनों, संगोष्ठियों तथा कार्यशालाओं के क्षेत्र में तथा उनके बीच परस्पर सृजनात्मक एवं समीक्षात्मक संवाद तथा विचार -विमर्श के लिए एक मंच उपलब्ध कराना।

(5) दर्शन, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संबंधी वर्तमान विचारों और कलाओं के बीच संवाद को बढ़ावा देना ताकि बौद्धिक समझबूझ के उस अन्तर को दूर किया जा सके, जो अक्सर एक तरफ आधुनिक विज्ञान और दूसरी तरफ कला तथा संस्कृति, जिसमें परम्परागत कला-कौशल तथा ज्ञान शामिल है, के बीच उत्पन्न हो जाता है।

(6) भारतीय प्रकृति के अनुरूप अनुसन्धान कार्यक्रमों तथा कला प्रशासन हेतु आदर्श तैयार करना।

(7) विभिन्न सामाजिक स्तरों, समुदायों और क्षेत्रों के बीच पारस्परिक क्रियाओं के जटिल ताने-बाने के रचनात्मक व गतिशील तत्वों को स्पष्ट करना।

(8) भारत और विश्व के अन्य भागों के बीच ऐतिहासिक और सांस्कृतिक सम्बन्धों के प्रति जागरूकता व संवेदनशीलता को प्रोत्साहन देना।

(9) कला और संस्कृति के अन्य राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्रों के साथ संचार-तंत्र का विकास करना, और कला, मानविकी और सांस्कृतिक धरोहर से सम्बद्ध शोध करने और उनको मान्यता प्रदान करवाने हेतु भारतीय तथा विदेशी विश्वविद्यालयों एवं अन्य उच्च शिक्षण संस्थाओं के साथ संबंध स्थापित करना।

विशेष कार्यक्रमों तथा परियोजनाओं के माध्यम से कलाओं और अन्य विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों में अन्योन्याश्रय सम्बन्ध, विभिन्न क्षेत्रों के मध्य परस्पर प्रभाव तथा जनजातीय, ग्रामीण, एवं नागरिक परम्पराओं के बीच पारस्परिक सम्बन्धों का, एवं इसी प्रकार भारत की लिखित एवं मौखिक धाराओं के मध्य पारस्परिक आदान-प्रदान का अन्वेषण, अभिलेखन और प्रस्तुतीकरण किया जाएगा।

न्यास का निर्माण

भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के कला विभाग के संकल्प संख्या एफ-16-7/86-कला, दिनांक 19 मार्च, 1987 के अनुसार, 24 मार्च,1987 को नई दिल्ली में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास का विधिवत् गठन व पंजीकरण किया गया। प्रारम्भ में एक सात सदस्यीय न्यास स्थापित किया गया था जिसका समय-समय पर पुनर्गठन किया गया। भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय ओ०एम०एफ०स०16/15/95-लिब-II दिनाङ्क 7.01.2000 द्वारा न्यास का पुनगर्ठन किया गया ।

नवगठित न्यास के न्यासियों की सूची अनुबन्ध-1 पर है।

नवगठित न्यास की कार्यकारिणी समिति के सदस्यों की सूची अनुबंध-2 पर है।

संगठन

अपनी संकल्पनात्मक योजना में उल्लिखित उद्देश्यों तथा अपने मुख्य लक्ष्यों को पूरा करने हेतु केन्द्र, संरचनात्मक दृष्टि से स्वायत्त, किन्तु प्रक्रियात्मक रूप से सम्बद्ध, पाँच संभागों के माध्यम से कार्य करता है ।

कलानिधि इसमें (क) मानविकी विषयों तथा कलाओं में अनुसंधान हेतु प्रमुख संसाधन केन्द्र के रूप में कार्य करने के लिए, बहुविध संग्रहों से युक्त एक सांस्कृतिक-सन्दर्भ पुस्तकालय है, जिसे सम्बल प्रदान करने के लिए (ख) कलाओं, मानविकी विषयों तथा सांस्कृतिक धरोहर पर एक कम्प्यूटरीकृत राष्ट्रीय सूचना प्रणाली एवं डेटा बैंक तथा (ग) सांस्कृतिक अभिलेखागार और कलाकारों/विद्वानों के बहुविध व्यक्तिगत संग्रह भी हैं।

कलाकोश यह संभाग आधारभूत अनुसन्धान का कार्य करता है। इसके दीर्घावधिक कार्यक्रमों में, (क) कला की आधारभूत संकल्पनाओं का एक कोश तथा मूलभूत तकनीकी शब्दों का संग्रह और अन्तर्विषयक शब्दावलियाँ, (ख) भारतीय कलाओं के आधारभूत ग्रन्थों की शृंखला (ग) भारतीय कला-विषयक, समीक्षात्मक साहित्य के पुनर्मुद्रण की शृंखला, (घ) भारतीय कलाओं का एक बहुखण्डीय विश्वकोश, तथा (ङ) क्षेत्र अध्ययन परक कार्यक्रम, सम्मिलित हैं।

जनपद-सम्पदा यह संभाग (क) लोक व जनजातीय कलाओं और शिल्पों से संबंधित महत्त्वपूर्ण सामग्री का प्रलेखन करता है, (ख) बहुविध संचार माध्यमों द्वारा प्रस्तुतियाँ करता है, (ग) भारतीय सांस्कृतिक एवं राजनीतिक आयामों के ताने-बाने के वैकल्पिक मॉडल तैयार करने हेतु जनजातीय समुदायों की बहुविषयक जीवन-शैली के अध्ययन की व्यवस्था करता है। इसके साथ-साथ इस संभाग ने एक बाल रंगशाला स्थापित की है तथा एक संरक्षण प्रयोगशाला स्थापित करने की भी सोच रहा है।

कलादर्शन यह स्कन्ध कला व संस्कृति के एकीकृत विषयों तथा संकल्पनाओं पर अन्तर्विषयक संगोष्ठियों, प्रदर्शनियों व प्रस्तुतियों के लिए एक मंच उपलब्ध करवाता है। इसके प्रस्तावित भवनों में इन कार्यकलापों के लिए तीन रंगशालाएँ तथा बड़ी-बड़ी दीर्घाएँ होंगी।

सांस्कृतिक सूचना-विज्ञान प्रयोगशाला 1994 में इस प्रयोगशाला की स्थापना, यू०एन०डी०पी० की सहायता से चलने वाली बहुमाध्यमिक प्रलेखन परियोजना स्ट्रेंगथेनिंग नेशनल फैसिलिटी फॉर इंटर-एक्टिव मल्टी मीडिया डॉक्यूमेंटेशन ऑफ कल्चरल रिसोर्सेज़ द्वारा की गई थी। विषय विशेषज्ञों के दिशा निर्देश से केन्द्र का दल इंटर-एक्टिव बहुमाध्यमिक प्रलेखन एवं सांस्कृतिक सूचना के गहन विश्लेषण में सक्षम हुआ। इस दक्षता का प्रयोग संस्कृति की संपूर्ण एवं अन्त:सम्बद्ध संकल्पना में सांस्कृतिक धरोहर के यथार्थ पुन: सृजन के लिए किया जा रहा है।

सूत्रधार यह संभाग अन्य सभी प्रभागों को प्रशासनिक, प्रबन्धकीय और संगठनात्मक सहायता व सेवाएँ उपलब्ध करवाता है।

संस्था के शैक्षणिक स्कन्ध अर्थात् कलानिधि एवं कलाकोश अपना ध्यान मुख्यत: बहुविध प्राथमिक व गौण सामग्री के संग्रह पर केन्द्रित करते हैं। ये इसके लिए आधारभूत संकल्पनाओं की खोज करते हैं, आकार-आकृति के सिद्धान्तों का पता लगाते हैं और पारिभाषिक शब्दावलियों का स्पष्टीकरण प्रस्तुत करते हैं। यह कार्य वे सिद्धान्त और पाठ (शास्त्र) और बौद्धिक चर्चा (विमर्श) एवं निर्वचन (मार्ग)के स्तर पर इनकी व्याख्या के रूप में करते हैं। जनपद-सम्पदा एवं कलादर्शन, लोक, देश एवं जन के स्तर पर अभिव्यक्ति, प्रक्रिया, जीवन कार्यकलाप तथा लोक, देश एवं जन के स्तर पर अभिव्यक्ति, प्रक्रिया, जीवन कार्यकलाप तथा जीवन-शैली और मौखिक परम्पराओं पर अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं। कुल मिलाकर, चारों संभागों के कार्यक्रम कलाओं को, जीवन एवं अन्य कलेतर अनुशासनों से उनके सम्बन्ध को, वास्तविक सन्दर्भों में प्रस्तुत करते हैं।

सभी संभागों की अनुसन्धान, कार्यक्रम-निर्माण व फलावाप्ति की प्रविधियाँ समान हैं। वैसे, हर संभाग का कार्य, अन्य संभागों के कार्यक्रमों का पूरक है।

वर्ष 2001-2002 की अवधि में इ.गा.रा.क.केन्द्र की गतिविधियों का विवरण अब प्रस्तुत किया जा रहा है।

वार्षिक प्रतिवेदन

1 अप्रैल, 2001 से 31 मार्च, 2002 तक

संक्षिप्त विवरण

प्रस्तावना

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (केन्द्र) अपनी स्थापना के पन्द्रहवें वर्ष (2001-2002) में, कलाओं के एक प्रमुख संसाधन-केन्द्र के रूप में कार्य करते हुए अपने सुपरिभाषित उद्देश्यों को प्राप्त करता रहा। इस हेतु केन्द्र ने कला तथा संस्कृति के क्षेत्र में एकीकृत अध्ययन एवं शोध कार्यक्रम हाथ में लिए, जैसे, कलाओं तथा तत्संबंधी विषयों के मूल ग्रंथों, पारिभाषिक शब्दावलियों तथा रिपोर्टों का प्रकाशन। इसके अतिरिक्त, केन्द्र ने संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, व्याख्यानों और विभिन्न प्रकार की प्रदर्शनियों तथा मल्टी-मीडिया प्रस्तुतियों के माध्यम से सृजनात्मक एवं समालोचनात्मक संवाद के लिए एक नियमित मंच प्रदान किया। इन कार्यक्रमों की व्याप्ति-परिधि में मूलभूत संकल्पनाओं तथा मीमांसात्मक विचार एवं संस्कृति से लेकर समकालीन अनुसंधान तक वह सब कुछ समाविष्ट है जिसका संबंध पुरातत्व, मानव विज्ञान, सामाजिक विज्ञानों से लेकर पुस्तकालय विज्ञान, कंप्यूटर मानविकी विषयों तथा कला इतिहास तक के सभी शास्त्रों से है।

कला तथा संस्कृति के प्रधान संसाधन केन्द्र के रूप में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने प्रदर्शनियों तथा संगोष्ठियों जैसे तरह-तरह के कार्यक्रमों के माध्यम से जनसाधारण तथा विद्वज्जन, दोनों ही स्तरों पर ज्ञान के प्रचार-प्रचार में पर्याप्त योगदान दिया। उसने भारत तथा विदेश स्थित अनेक संस्थाओं तथा विद्वानों के साथ संपर्क स्थापित किए और उन्हें सुदृढ़ बनाए रखा। साथ ही, केन्द्र ने बहुत-सी संथाओं के साथ मिल कर अपने सहयोगात्मक कार्यक्रमों को अधिक व्यापक एवं घनिष्ठ बनाए रखने का प्रयास जारी रखा। आज इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विद्वानों तथा संस्थाओं के साथ बराबर संपर्क बनाए हुए है जो एक तरह से केन्द्र के बृहत्तर परिवार के ही सदस्य हैं।

मैन्युस्क्रिप्ट मिशन :- राष्ट्रीय पाण्डुलिपि परियोजना के लिए इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र को प्रमुख अभिकर्त्ता के रूप में चुना गया। यद्यपि मिशन की आधिकारिक घोषणा बाद में हुई, पर इ.गा.रा.क.केन्द्र ने मिशन के लिए पर्याप्त आधारभूत कार्य किया।

वर्ष के दौरान, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने मुद्रित पुस्तकों, माइक्रोफिल्मांकित पांडुलिपियों, स्लाइडों, फोटोग्राफों, ऑडियो-विज्युअल सामग्री तथा मानव जाति विज्ञान आदि से संबंधित अपने संग्रहों को और समृद्ध बनाया।

केन्द्र ने भारत के विभिन्न पुस्तकालयों से माइक्रोफिल्म कुंडलियों की प्रतिलिपियाँ प्राप्त कीं और साथ ही, इनियन (मॉस्को) से माइक्रोफिशें भी संग्रह में जोड़ी गईं।

नूतन अवाप्तियों द्वारा केन्द्र में विद्यमान एशिया के सबसे बड़े स्लाइड-संग्रह का अभिवर्द्धन किया गया। जीवंत साँस्कृतिक परम्परा के 11 धरोहर जोड़े गए।

समझौता-पत्र

श्रमसाध्य अनुसंधान के फलस्वरूप निर्मित अपने आन्तरिक कार्यक्रमों के प्रसारण हेतु इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने दूरदर्शन के साथ एक समझौता किया। इसके द्वारा, दूरदर्शन अपने नए चैनल दूरदर्शन भारती पर केन्द्र के यह कार्यक्रम, एक वर्ष तक सप्ताह में दो बार एक घण्टे के लिए प्रसारित करेगा।

कलानिधि

(पुस्तकालय, सूचना प्रणाली व सांस्कृतिक अभिलेखागार-प्रभाग)

कलानिधि प्रभाग के प्रमुख घटक हैं- एक उत्कृष्ट सन्दर्भ पुस्तकालय और सूचना प्रणालियों तथा मल्टीमीडिया डेटाबेस की सुविधाओं से युक्त एक सांस्कृतिक अभिलेखागार । मुद्रित पुस्तकों के साथ-साथ, संदर्भ पुस्तकालय के पास, भारतीय व विदेशी स्रोतों से प्राप्त माइक्रोफिल्मांकित पांडुलिपियों का एक अनुपम संग्रह भी है और इसके अभिलेखागार में स्थापत्य, मूर्तिकला व चित्रकला से संबंधित फोटोग्राफ, स्लाइडें तथा अन्य वस्तुएँ और काफी बड़ी संख्या में श्रव्य/दृश्य रेकार्डिंग्स व अन्य सामग्री संग्रहीत हैं।

कार्यक्रम क: सन्दर्भ पुस्तकालय

मुद्रित सामग्री:-

आलोच्य वर्ष में मुद्रित पुस्तकों के संग्रह में 460 खण्डों की वृद्धि हुई। इसमें 174 खरीदी गई पुस्तकें व विभिन्न स्रोतों से उपहारस्वरूप प्राप्त 286 खण्ड शामिल हैं।

इस वर्ष के उल्लेखनीय दाता हैं:- ऑरोबिन्दो आश्रम ट्रस्ट, पॉंडिचेरी; रामकृष्ण मिशन, कोलकाता; विपश्ना रिसर्च इंस्टियूट, इगतपुरी, महाराष्ट्र; प्रो० एम०के०पालट, पं० एस०मुखोपाध्याय तथा डॉ०ए०सम्पत् नारायण । सम्प्रति पुस्तकालय में कुल 1,22,466 पुस्तक-खण्ड हैं। इनमें से 62,363 प्रतियाँ जिल्दबन्द हैं।

कैटलॉग

1. पुस्तकें:-

कार्य वर्ष के दौरान, 1,581 पुस्तक-खण्डों को वर्गीकृत करके कैटलॉग में दर्ज किया गया। प्रोसेस्ड पुस्तकों से सम्बद्ध 1441 रेकार्डों को लिबसिस डेटाबेस में प्रविष्ट किया गया ।

2. पत्र-पत्रिकाएँ :-

पुस्तकालय, इस वर्ष भी, पिछले प्रतिवेदन में उल्लिखित शैक्षणिक व तकनीकी पत्र-पत्रिकाओं का ग्राहक बना रहा। संस्थागत सदस्यता पत्रों सहित ऐसे पत्र-पत्रिकाओं की संख्या अब 277 है। इनके विषय हैं- नृतत्त्वशास्त्र, पुरातत्त्वशास्त्र, कला,संदर्भ-ग्रन्थ सूची, पुस्तक-समीक्षा, कम्प्यूटर व सूचना-विज्ञान, संरक्षण, लोक-साहित्य, इतिहास, मानविकी, भाषा-विज्ञान, साहित्य, संग्रहालय-अध्ययन, मुद्रा-विज्ञान, प्राच्य अध्ययन, प्रदर्शन-कला, दर्शन, पुत्तलिका-कला, धर्म, समाजशास्त्र, थियेटर व क्षेत्र-अध्ययन ।

3. कलानिधि के नए भवन में पुस्तक-संग्रह का स्थानांतरण

संदर्भ पुस्तकालय के पुस्तक संग्रहों को कलानिधि के नए भवन में ले जाया जा चुका है।

4. सेवाएँ

1. वर्ष के दौरान, इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अध्येताओं व कर्मचारियों के अतिरिक्त 546 लोगों को सेवाएँ उपलब्ध करवाईं गईं । केन्द्र के अध्येताओं व कर्मचारियों को 1819 खण्ड पुस्तकें पढ़ने के लिए जारी की गईं तथा 2148 खण्ड पुस्तकें उनसे वापस प्राप्त की गईं।
2. अन्तर्पुस्तकालय ऋण सेवा के अन्तर्गत 55 खण्ड पुस्तकें ऋण पर दी गई तथा 17 पुस्तकें ऋण पर ली गईं ।

5. ग्रन्थसूची :

ग्रन्थसूची परियोजना में निम्नलिखित प्रविष्टियाँ जोड़ी गईं:-

1. **एन एनोटेटिड बिब्लियोग्राफी ऑन मास्क** विषय पर दस और सटिप्पण प्रविष्टियाँ तैयार की गईं। कुल संख्या अब 256 हो गई है।
2. **एन एनोटेटिड बिब्लियोग्राफी ऑन गन्धर्व आर्ट** अस्सी सटिप्पण प्रविष्टियाँ तैयार की गई और कार्य प्रगति पर है। प्रविष्टियों की कुल संख्या अब 216 है।

अमुद्रित सामग्री

माइक्रोफिश:-

इस संग्रह में 180 माइक्रोफिश जोड़ी गईं। ये सभी इनियन मास्को से प्राप्त हुईं।

माइक्रोफिल्में

48 अर्जित माइक्रोफिल्मों के रोल्स को कैटलॉग में दर्ज किया गया, जिसमें 520 पाण्डुलिपियाँ थीं । इनमें शामिल थीं:- लंदन (यू०के०) के वेलकम इंस्टिट्यूट फॉर द हिस्ट्री ऑफ मेडिसिन से बारह कुंडलियाँ (110 पाण्डुलिपियाँ); पेरिस (फ्रांस) के बिब्लियोथेक नेशनाल् से सात कुण्डलियाँ (90 पाण्डुलिपियाँ); जर्मनी के त्यूबिंगन संग्रह से नौ कुण्डलियाँ (100 पाण्डुलिपियाँ)। साथ ही, लिबसिस डेटाबेस में प्रोसेस्ड माइक्रोफिश से संबद्ध 858 रिकार्ड भरे गए ।

माइक्रोफॉर्म

अन्तर्विभागीय उत्पादन

प्रतिलिपिकरण

माइक्रोफिल्म कुंडलियों की प्रतिलिपि तैयार करने का कार्यक्रम सामान्य परिपाटी के अनुसार चलता रहा और उनकी प्रतिकृतियाँ मूल पाण्डुलिपियों के मालिकों, अभिरक्षकों को और सन्दर्भ प्रयोजन के लिए पुस्तकालय को दी जाती रहीं। तदनुसार, केन्द्र के आन्तरिक उत्पादन दल द्वारा 1) गवर्नमेंट ओरियंटल मैन्यूस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी, चेन्नई तथा 2) राजस्थान ओरियंटल रिसर्च इंस्टिट्यूट, जोधपुर के संग्रहों की पांडुलिपियों की 704 माइक्रोफिल्म कुंडलियों की प्रतिलिपियाँ तैयार की गई।

माइक्रोफिल्मांकन

वर्ष के दौरान, सन्दर्भ पुस्तकालय को माइक्रोफिल्मों की कुल 1101 पॉज़िटिव कुण्डलियाँ दी गईं। ये कुण्डलियाँ निम्नलिखित संस्थाओं में उपलब्ध पाण्डुलिपियों से संबंधित थीं- गवर्नमेंट ओरियंटल मैन्यूस्क्रिप्ट लाइब्रेरी, चेन्नई (613 कुण्डलियाँ), सरस्वती भवन लाइब्रेरी, वाराणसी (213 कुण्डलियाँ), सिंधिया ओरियंटल रिसर्च इंस्टिट्यूट, उज्जैन (275 कुण्डलियाँ)। संदर्भ पुस्तकालय ने 815 पॉज़िटिव कुण्डलियों (6150 पांडुलिपियों) को अवासि रजिस्टर में चढ़ाकर उन्हें अध्येताओं के लिए सुलभ करवाया।

विभिन्न केन्द्रों से माइक्रोफिल्म संग्रह

आलोच्य वर्ष के दौरान, केन्द्र द्वारा भिन्न-भिन्न केन्द्रों में इस प्रयोजन के लिए नियोजित विभिन्न कार्यालयों के माध्यम से किए गए माइक्रोफिल्मांकन कार्य की प्रगति का ब्यौरा इस प्रकार है

परियोजनाएँ	कुल पाण्डुलिपियाँ	आरम्भ की तिथि	वर्ष के दौरान अर्जित कुण्डलियों की संख्या	पाण्डुलिपियों/ पन्नों की संख्या	भाषा/लिपि
जी०ओ०एम०एल०, चेन्नई	45,000	10.09.89	130	एम-2,861 एफ-78,811	संस्कृत/तेलुगु/ देवनागरी
आर०ओ०आर०आई० जोधपुर	2,518	03.10.97	4	एम-45 एफ-2439	संस्कृत/प्राकृत/ देवनागरी
डॉ०यू०वी०एस० लाइब्रेरी, चेन्नई	550	03.09.98	99	एम-1168 एफ-79,449	तमिल/तमिल
शंकर मठ, कांचीपुरम	3000 + दुर्लभ पुस्तकें	14.11.94	-	(335 प्रतिलिपि कुण्डलियाँ)	संस्कृत
कुडंलियों का प्रतिलिपिकरण*				(168 मूल कुण्डलियों से)	

* नोट : माइक्रोफिल्म कुंडलियों के प्रतिलिपिकरण का कार्य, सेवा कार्यालय को समझौता-पत्र के अनुसार सौंपा गया ।

नई परियोजनाएँ

1. सौराष्ट्र सभा, मदुरै
2. ओ०आर० आई०, मैसूर
3. श्री वेंकटेश्वर ओरियंटल इंस्टिट्यूट, तिरूपति
4. वी०वी०आर० आई, साधु आश्रम, होशियारपुर
5. ओ०आर० आई०, बडोदा
6. आसाम राज्य की छः परियोजनाएँ
7. भोगिलाल लहरचंद इंस्टिट्यूट ऑफ इंडॉलॉजी, अलीपुर, दिल्ली
8. जैन बसाडि, मूडबिदरी, धर्मशाला

माइक्रोफिल्म कुंडलियों का डिजिटीकरण

वर्ष के दौरान, सामने दिए गए विवरण के अनुरूप 282 माइक्रोफिल्म कुंडलियों को डिजिटीकरण के लिए उपलब्ध करवाया गया और डिजिटीकरण कार्य में सी आई एल ने सहयोग दिया:-

1.	मणिपुर स्टेट म्यूज़ियम, इम्फाल	9 कुंडलियाँ
2.	मणिपुर स्टेट आर्काइव्ज़, इम्फाल	1 कुंडली
3.	एरेबिक एंड पर्शियन रिसर्च इंस्टिट्यूट, टोंक	225 कुंडलियाँ
4.	एस०बी०एल०, वाराणसी	41 कुंडलियाँ
5.	जी०ओ०एम०एल०,चेन्नई	2 कुंडलियाँ
6.	ओ आर आई एंड एम एल, त्रिवेन्द्रम्	1 कुंडली
7.	एस आर वी जी एस सी त्रिपुनितुरा	2 कुंडलियाँ
8.	एस आर एस आर आई, जम्मू	1 कुंडली
		282 कुंडलियाँ

स्लाइडें:-

आलोच्य अवधि में, स्लाइड एकक में 26 सचित्र दुर्लभ पुस्तकों,लद्दाख के थंका तथा भूटान की जीवन-शैली की 296 स्लाइडें जोड़ी गईं । दुर्लभ पुस्तक संग्रह हेतु 693 स्लाइडों के प्रलेखन को अवाप्ति रजिस्टर में चढ़ाया गया । अध्येताओं के उपयोग के लिए 693 स्लाइडों को लिबसिस डेटाबेस में डाला गया व 693 स्लाइडों की प्रतिकृतियाँ बनाई गईं। 2331 स्लाइडें स्कैनिंग/डिजिटिकरण हेतु सी आई एल को भेजी गईं। स्लाइड एकक ने 1272 स्लाइडों के माध्यम से केन्द्र के तथा आगन्तुक अध्येताओं को सेवाएँ प्रदान कीं। दूरदर्शन भारती पर प्रसारित होने वाले कलातरंग कार्यक्रम हेतु इस एकक ने 2194 स्लाइडें व सम्बद्ध कैटलॉग, मीडिया प्रोडक्शन यूनिट को उपलब्ध करवाए।

अध्येताओं के उपयोगार्थ, कालीघाट चित्रकारियों, रामायण व दुर्लभ सचित्र पुस्तकों की विवरणात्मक सूचियाँ भी तैयार की गईं।

संरक्षण:-

समीक्षाधीन अवधि में, संरक्षण एकक पूर्ववत् दुर्लभ पुस्तकों, चित्रों व पटचित्रों के परिरक्षण के कार्य में संलग्न रहा । महेश्वर नियोग संग्रह से 450 पुस्तकों की तथा फफूंदी लगी 40 पुस्तक-जिल्दों की धूम-शुद्धि (फ्यूमिगेशन) की गई और तीन दुर्लभ पुस्तकों को अम्ल-मुक्त करके उनकी मरम्मत की गई । यशोधर मठपाल की तीस कलाकृतियों के जल-रंग पुनरावृतियों के यथापूर्वन का कार्य पूरा किया गया । सीलन तथा फफूंदी लगी 5000 स्लाइडों का यथापूर्वन किया गया।

इस एकक ने अगस्त, 2001 में क्वीन्स मेरी स्कूल के लिए पेपर मेशी-कला के प्रशिक्षणार्थ एक कार्यशाला का आयोजन किया। सितम्बर, 2001 में सेंट कोलम्बस स्कूल के छात्रों के लिए एक पाँच-दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया जिसका विषय था-इफ यू लव योअर बुक्स-सेव देम। फरवरी, 2002 में ब्रिटिश स्कूल के एक छात्र-समूह ने संरक्षण प्रयोगशाला का दौरा किया।

कार्यक्रम ख: राष्ट्रीय सूचना प्रणाली व डेटा बैंक

कलानिधि ख के प्रमुख उत्तरदायित्व हैं- केन्द्र के सभी प्रभागों की कम्प्यूटर संबंधी आवश्यकताओं का पता लगाना, डेटा का विश्लेषण, सूचना प्रणाली का नियोजन, विकास, परिरक्षण एवं क्रियान्वयन तथा सदस्यों को

प्रशिक्षण । वर्ष 2001-2002 के दौरान, केन्द्र के अध्येताओं एवं कर्मचारियों को अनेक सुविधाएँ यथा-इंटरनेट, डेलनेट, ई-मेल व डेटा प्रविष्टि संबंधी सहायता, प्रदान की गईं । साथ ही, डेटाबेस में, पांडुलिपियों व स्लाइडों के 2000 रिकार्ड डाले गए और देवनागरी लिपि के 5000 एवं स्लाइडों के 8000 रिकार्ड संशोधित किए गए।

कार्यक्रम ग: सांस्कृतिक अभिलेखागार

कलानिधि ग के दो भाग हैं- श्रव्य-दृश्य एकक एवं सांस्कृतिक अभिलेखागार ।

1. श्रव्य-दृश्य एकक केन्द्र की घटनाओं एवं गतिविधियों का प्रलेखन करता है और वीडियो एवं फिल्म के माध्यम से केन्द्र की गतिविधियों का प्रस्तुतीकरण करता है। इसी श्रव्य-दृश्य सामग्री से सांस्कृतिक अभिलेखागार की आडियो-विश्युल लाइब्रेरी का निर्माण होता है।
2. सांस्कृतिक अभिलेखागार में कलाओं और मानविकी विषयों से संबंधित मौलिक व अनुलिपिक सामग्री तथा व्यक्तिगत संग्रहों का संग्रह, परिरक्षण व प्रलेखन किया जाता है।

अवाप्ति रजिस्टर में दर्ज करना/कैटलॉग कार्य

लान्स डेन संग्रह की रंगीन स्लाइडों के कैटलॉग बनाने का काम जारी रहा और इस वर्ष 100 स्लाइडों को चुनकर कैटलॉग में जोड़ा गया । बृहदीश्वर पर बिनॉय बेहल ने 893 स्लाइडों को सूचीबद्ध किया । साथ ही, केरल के विधिपरक नृत्य के बालन नांबियर संग्रह में 100 स्लाइडों को सूचीबद्ध किया गया । इस एकक ने, 972 ऑडियो कसेटों को चलाया, सूचीबद्ध किया और 1493 कैसेटों के एडिट कार्ड तैयार किए।

साँस्कृतिक अभिलेखागार के अर्जन-कार्यक्रम के अन्तर्गत, उड़ीसा के श्री एस०के०पात्र द्वारा जयदेव कृत गीतगोविन्द जड़ित 50 मीटर इख़त सिल्क रोल का उपार्जन किया गया। इख़त एक जटिल बुनाई प्रक्रिया है, जिसमें चित्रों व अक्षरों की आकृति में रेशम के धागों की बुनाई की जाती है। साथ ही, मीडिया प्रोडक्शन एकक के माध्यम से निम्नलिखित फिल्में भी प्राप्त हुईं:-

1) क़िट्टू और पंखी-पंचतंत्र की कथा पर आधारित एक फिल्म ; 2) बानम ऑफ सन्थाल्स-बप्पा रे कृत; 3) शिखा झिंगन कृत-मिरासन्स ऑफ पंजाब; 4)बप्पा रे कृत-महाकुम्भ; 5)एन राधाकृष्ण कृत- कुट्टियाट्टम्; 6)संजय खन्ना कृत-सात सुर; 7) इ०गाँ०रा०क०केन्द्र की फिल्मों का मॉन्टेज; 8) फोक गेम्स ऑफ तुलुनाडु - दिनेश शिनॉय कृत ; 9) रायन कृत-काली; 10) सौरव किशोर कृत- द लेगेसी ऑफ ताना भगत; 11) संजीव भट्टाचार्य कृत-बिहाइन्ड द मास्क।

प्रलेखन

मीडिया प्रोडक्शन एकक द्वारा वर्ष 2001-2002 में निम्नलिखित महत्वपूर्ण प्रलेखन गतिविधियाँ संपन्न हुईं:-

1. महा कुम्भ-इन सर्च ऑफ नेक्टर
2. मिरासन्स ऑफ पंजाब
3. कोली डान्स ऑफ महाराष्ट्र
4. पंचतंत्र-एनिमेशन फिल्म
5. फ़ोक गेम्स ऑफ तुलुनाड

6. फ़ोकलोर म्यूज़ियम ऑफ मैसूर
7. बिहाइंड द मास्क
8. लेगेसी ऑफ ताना भगत
9. सात सुर-थ्री घरानाज़ (बच्चा क़व्वाल, आगरा व ग्वालियर)
10. महामस्तकाभिषेकम् एट करकल
11. तेय्यम्

कलातरंग कार्यक्रम:-

दूरदर्शन के साथ एक समझौता किया गया जिसके द्वारा, डी डी भारती पर केन्द्र के कार्यक्रम एक वर्ष तक, हफ़्ते में दो बार, एक घण्टे के लिए प्रसारित किए जाऐंगे ।

मैन्युस्क्रिप्ट मिशन:-

इस मिशन की गतिविधियों के अंतर्गत पाण्डुलिपियों के राष्ट्रीय रजिस्टर हेतु सूचना संग्रह के लिए, जैन संस्थानों की एक सूची तैयार की गई। भारत में स्थित विभिन्न प्राच्य-विद्या पुस्तकालयों को मूल सूचना-संग्रहण हेतु प्रश्नसूची प्रेषित की गई। भारत सरकार के संस्कृति विभाग के सहयोग से 2 फरवरी, 2002 को मैन्यूस्क्रिप्ट मिशन के कार्यान्वयन के लिए उपायों पर विचार-विमर्श हेतु संस्कृत एवं पालि पर एक-दिवसीय संगोष्ठी आयोजित की गई।

मैन्यूस्क्रिप्ट एकक ने अप्रकाशित आयुर्वेदिक पाण्डुलिपियों की सूची एवं विस्तृत डेटाशीट तैयार की। इ०गाँ०रा०क०केन्द्र के बेंगलोर कार्यालय में 25-26 नवंबर, 2001 को इसी प्रकाश में आयुर्वेद पर एक संगोष्ठी आयोजित की गई। इस एकक ने ज्योतिष पर एक संगोष्ठी के लिए ज्योतिष की पांडुलिपियों का चुनाव एवं प्रिंट आउट उपलब्ध करवा कर इस ज्ञान-यज्ञ में हिस्सा लिया। संदर्भ पुस्तकालय में उपलब्ध पाण्डुलिपियों से संबंधित विद्वानों के प्रश्नों का भी इस एकक ने उत्तर दिया।

कलाकोश

(अनुसन्धान, प्रकाशन व क्षेत्र-अध्ययन प्रभाग)

केन्द्र के अनुसन्धान व प्रकाशन का प्रमुख प्रभाग कलाकोश है। यह प्रभाग कलाओं से सम्बन्धित बौद्धिक व पाठपरक परम्पराओं का उनके बहुस्तरीय एवं विविधविद्यापरक सन्दर्भों में अनुसन्धान करता है । केन्द्र के प्रमुख अनुसन्धान व प्रकाशन प्रभाग के रूप में कार्यरत यह स्कन्ध, शास्त्र को मौखिकु; दृश्य को श्रव्य तथा सिद्धान्त पक्ष को व्यवहार पक्ष के साथ जोड़ते हुए, कलाओं को एक सांस्कृतिक प्रणाली के समग्र सांचे में स्थापित करने का प्रयास करता है।

इन उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए, प्रभाग ने (क) उन मूल अवधारणाओं का पता लगाया है, जो भारतीय चिन्तन का आधार हैं तथा जो सभी विषयों/शास्त्रों व जीवन के आयामों में व्याप्त हैं; (ख) अब तक अज्ञात, अप्रकाशित अथवा प्रकाशन हेतु अगम्य मूल पाठ-सामग्री के सानुवाद प्रकाशन की व्यवस्था की है; (ग) ऐसे अध्येताओं व विशेषज्ञों की कृतियों के प्रकाशन की योजना बनाई है, जो अपने समग्रवादी दृष्टिकोण, अन्तस र्स्कृतिक अधिगम तथा बहुविद्यापरक रीति द्वारा कलात्मक परम्पराओं के विमर्श में अग्रणी रहे हैं; (घ) एक विशेष परियोजना के अन्तर्गत, कलाओं पर एक 21 खण्डीय विश्वकोशीय परिमाण का कार्यक्रम प्रारम्भ करने के लिए प्रारूप तैयार किया है।

प्रभाग के कार्यक्रमों को मुख्य रूप से इन श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है-

क.	**कलातत्त्वकोश**	:	भारतीय कलाओं की आधारभूत संकल्पनाओं का कोश
ख.	**कलामूलशास्त्र**	:	भारतीय कलात्मक परम्पराओं तथा कलाविशेष से सम्बद्ध, मूलआधारभूत ग्रन्थों की शृंखला
ग.	**कलासमालोचन**	:	समीक्षात्मक/आलोचनात्मक विद्वत्ता एवं अनुसन्धान की ग्रन्थमाला
घ.	**कलाओं का विश्वकोश एवं कलाओं का इतिहास**	:	(1) भारतीय कलाओं के रूपकों पर एक बहुखंडीय परियोजना (2) भारत की मुद्रांकन कला पर एक परियोजना
	क्षेत्र अध्ययन	:	(1) दक्षिण-पूर्व एशिया परक अध्ययन (2) पूर्व-एशिया परक अध्ययन (3) स्लाविक व मध्य एशिया परक अध्ययन

कार्यक्रम कः कलातत्त्वकोश

(भारतीय कलाओं की आधारभूत संकल्पनाओं का कोश)

प्रसिद्ध विद्वानों के परामर्श द्वारा ऐसे लगभग 250 पारिभाषिक शब्दों की सूची बनाई गई है जो अनेक शास्त्रों के मूल ग्रन्थों में व्यवहृत हुए हैं और जिनका बीज कलाओं में दृष्टिगोचर होता है। प्रत्येक संकल्पना का अनुसन्धान, अनेक शास्त्रों के आधारभूत ग्रन्थों में किया जाता है जिससे एक ऐसे पारिभाषिक शब्द को चुना जा सके, जिसका एक मुख्य अर्थ व व्यापक स्वरूप हो, लेकिन कालान्तर में उसी शब्द का अनेकधा अर्थ-विस्तार हो गया हो । ऐसे संकलन, विश्लेषण व पुनः समायोजन के सहयोग से भारतीय परम्परा की मूलभूत एकता और उसके अनिवार्य

अन्योन्याश्रय स्वरूप का पनुर्निर्माण किया जा सकेगा। जैसा कि इससे पूर्व के प्रतिवेदन में बताया गया है, कलातत्त्वकोश का प्रथम खण्ड 1988 में प्रकाशित हुआ था, जिसमें आठ व्याप्तिपरक पारिभाषिक शब्दों का विवेचन था। दिक् व काल से सम्बद्ध 16 शब्दों का विवेचन मार्च,1992 में प्रकाशित द्वितीय खण्ड में किया गया । महाभूतों से सम्बद्ध शब्दों का विवेचन तृतीय खण्ड में आठ लेखों में किया गया जो 1997 में प्रकाशित हुआ तथा प्रकृति की अभिव्यक्ति: सृष्टि-विस्तार से सम्बद्ध सात लेख, चतुर्थ खण्ड में विवेचित किए गए और इसका विमोचन 14 दिसम्बर, 1998 को भारत के माननीय राष्ट्रपति द्वारा किया गया । इसमें इन्द्रिय, द्रव्य, धातु, गुण-दोष, अधिभूत-अधिदैव-अध्यात्म, स्थूल-सूक्ष्म-पर तथा सृष्टि-स्थिति-संहार से संबद्ध सात लेख हैं।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत कलातत्त्वकोश, खण्ड 1 का संशोधित व परिवर्द्धित संस्करण, **पर्वेसिव टर्म्स: व्याप्ति** शीर्षक से पुनर्मुद्रित हुआ। इसमें ब्रह्म, पुरुष, आत्मन्, शरीर, प्राण, बीज, लक्षण एवं शिल्प प्रभृति आठ पारिभाषिक शब्दों पर लेख समाहित हैं।

खण्ड 6, **पर्सेप्शन:आभास** की संकल्पनाओं पर है। प्राप्त लेखों का सम्पादन चल रहा है। इसमें नौ पारिभाषिक शब्द हैं- आभास, छाया-बिम्ब-प्रतिबिम्ब, सादृश्य-सारूप्य, अव्यक्त-व्यक्त, पद, लिंग-चिह्न, वृत्ति-रीति-प्रवृत्ति तथा अनुकृति-अनुकरण-अनुकीर्तन।

खण्ड 5 की कैमरा-रेडी-कॉपी तैयार होने वाली है। यह **कान्सेप्ट ऑफ फॉर्म एंड शेप: आकार आकृति** से सम्बद्ध है और इसमें इन शब्दों पर लेख है:- रेखा, रूप-प्रतिरूप, प्रतिमा-प्रतिकृति, विग्रह, मूर्ति, अर्चा, चिति-चैत्य-स्तूप, बन्ध-प्रबन्ध और सकल-निष्कल।

कलातत्त्वकोश के आगामी खण्डों के सम्पादन हेतु विशेषज्ञ-समिति की वार्षिक बैठक 8 एवं 9 नवम्बर, 2001 को हुई। बैठक में आगामी खण्डों के लिए पारिभाषिक शब्दों एवं लेखों को तैयार करने के लिए विद्वानों के चयन तथा शब्दों के वर्गीकरण आदि विषयों पर चर्चा हुई एवं निर्णय लिए गए। पन्द्रहवें खण्ड तक हर खण्ड के लिए पारिभाषिक शब्दों के संकल्पनात्मक वर्गीकरण को अंतिम रूप दिया गया। सभी खण्डों के लिए विद्वानों का चयन भी किया गया।

कलातत्त्वकोश के लिए सन्दर्भ-संकेतों के कार्ड बनाने का कार्य यथापूर्व चलता रहा ।

कार्यक्रम ख : कलामूलशास्त्र

(कलाओं से संबंधित आधारभूत ग्रन्थों की शृंखला)

कलाकोश प्रभाग का दूसरा दीर्घकालिक कार्यक्रम है-वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला, संगीत, नृत्य व नाट्य आदि भारतीय कलाओं से संबंधित आधारभूत ग्रन्थों का अन्वेषण और उनका समालोचनात्मक सम्पादन, टिप्पणियों व अनुवाद सहित ग्रन्थमाला में प्रकाशित करना ।

समीक्षाधीन अवधि में, इस कार्यक्रम के अन्तर्गत निम्नलिखित ग्रन्थ प्रकाशित हुए :-

काण्वशतपथब्राह्मण-चतुर्थ खण्ड; सम्पादक एवं अनुवादक- डॉ० सी० आर० स्वामिनाथन,(इसमें 6,7 व 8 काण्ड हैं।)

आलोच्य अवधि (2001-2002) के दौरान, कलामूलशास्त्र ग्रन्थमाला का 32 वाँ खण्ड **द चित्रसूत्र ऑफ द विष्णुधर्मोत्तर पुराण** प्रकाशित हुआ। इसका समीक्षात्मक संस्करण एवं अनुवाद डॉ पारूल दवे मुखर्जी ने किया

है। साथ ही, सामवेदीय कौथुम एवं राणायनीय शाखाओं से सम्बद्ध साम-शास्त्रीय साहित्य का महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ **पुष्पसूत्र** भी प्रकाशित हुआ। इसका संस्करण एवं अनुवाद सामगान के विशारद प्रो० जी० एच० तरलेकर ने किया है।

निम्नलिखित प्रकाशन पूर्णप्राय: हैं:-

1. काण्वशतपथब्राह्मण, पञ्चम खण्ड; सम्पादक एवंअनुवादक- डॉ० सी० आर० स्वामिनाथन।
2. चतुर्दण्डी-प्रकाशिका (प्रो० आर० सत्यनारायण)
3. ईश्वर-संहिता(प्रो० लक्ष्मी तातार्चार)
4. संगीत-मकरन्द (डॉ० विजयलक्ष्मी)
5. बौधायन-श्रौत-सूत्र (प्रो० सी०जी० काशिकर)
6. शून्य सेमिनार (में पठित लेख)

स्मारकीय व्याख्यान:-

डॉ. विद्या निवास मिश्र ने दो भागों में डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी स्मारकीय व्याख्यान प्रस्तुत किया। 28 फरवरी, 2002 को उन्होंने **द कॉन्सेप्ट ऑफ लैंग्वेज , कल्चर एण्ड लोक इन इण्डियन ट्रेडिशन एण्ड देयर इण्टर रिलेशनशिप** विषय पर व्याख्यान दिया। 1मार्च, 2002 को वे **भाषा एण्ड संस्कृति एज़ प्रोसेस एण्ड लोक एज़ प्रोसेसी** विषय पर बोले। न्यास के अध्यक्ष डॉ. एल.एम. सिंघवी ने अध्यक्षता की।

नई दिल्ली, विश्व पुस्तक मेले में प्रतिभागिता:-

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने नई दिल्ली में आयोजित विश्व पुस्तक मेले में (28 जनवरी से 4 फरवरी, 2002 तक) भाग लिया। यह किसी पुस्तक मेले में प्रतिभागिता का केन्द्र का प्रथम अवसर था। केन्द्र के माध्यम से इस आयोजन द्वारा केन्द्र का विश्व समुदाय से साक्षात् परिचय हुआ।

कार्यक्रम ग : कलासमालोचन

(कलाओं पर आलोचनात्मक एवं व्याख्यापरक लेख)

कलाकोश प्रभाग के कलासमालोचन कार्यक्रम के अन्तर्गत ऐसे ग्रन्थ प्रकाशित किए जाते हैं, जिनमें कलाओं तथा सौन्दर्यशास्त्र के विभिन्न पक्षों पर समालोचनात्मक सामग्री समाविष्ट हो । इस शृंखला के एक भाग के अन्तर्गत ऐसे विख्यात विद्वानों की कृतियों पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है, जिन्होंने आधारभूत संकल्पनाओं का विस्तारपूर्वक निरूपण किया है, चिरस्थाई स्रोतों का अन्वेषण किया है और नानाविध परम्पराओं के मध्याम सम्पर्क-सेतुओं का निर्माण किया है। इसके दूसरे भाग के अन्तर्गत, कुछ चुनिंदा विद्वान् लेखकों की कृतियों के पुनरीक्षित व पुनर्व्यवस्थित संस्करण एवं अनुवाद प्रकाशित किए जाते हैं। इस कार्यक्रम का सर्वाधिक उल्लेखनीय उपक्रम है; लगभग तीस खण्डों में, डॉ० आनन्द के० कुमारस्वामी की कृतियों का, विषयपरक पुनर्व्यवस्थापन तथा लेखक के प्रामाणिक संशोधनों सहित, एवं विख्यात विद्वानों द्वारा सम्पादित रूप में पुनर्मुद्रण।

वर्ष 1988 में कुछ प्रकाशनों से प्रारम्भ कर, कलासमालोचन कार्यक्रम के अन्तर्गत, मार्च, 2001 तक 45 से ज्यादा पुस्तकें प्रकाशित हो चुकीं थीं । आलोच्य अवधि में, निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हुईं-

1. स्तूप एंड इट्स टेक्नॉलॉजी: ए तिबेतो-बुद्धिस्ट पर्सपेक्टिव; लेखक-पेमा दोरजी (पुनर्मुद्रण)

निम्नलिखित पुस्तकें शीघ्र प्रकाशित होने वाली हैं:-

1. स्टाइलिस्टिक्स ऑफ बुद्धिस्ट आर्ट इन इण्डिया; लेखक प्रो० मिराई बेनिस्ति; संपादक-प्रो० पिएर-सिल्वैं-फ़िलियोज़ा
2. तस्वीर-ए-शीशाग़ान-वगैरह-वा-बयान-ए-आलात-ए-आन्हा; संपादक व अनुवादक-डॉ० मेहर अफ़शान फ़ारुकी
3. अवलोकितेश्वर इन साउथ-ईस्ट एशिया : लेखक-नंदना चुटिवोंग्ज़
4. लाइफ ऑफ मादाम ला मेरी; संपादक-श्रीमती उषा वेंकटेश्वरन
5. मुगल एण्ड पर्शियन पेंटिंग्स एण्ड इलस्ट्रेटिड पर्शियन मैन्यूस्क्रिप्ट्स एंड एल्बम्स इन द रज़ा लाइब्रेरी, रामपुर; संपादक-डॉ० जेड़ ए० देसाई व डॉ० बार्बरा स्मिट्ज़
6. एसेज़ ऑन रिलीजन, लिटरेचर एण्ड लॉ बाए जी०डी० सॉन्थाइमर, खण्ड- ॥; सम्पादक- प्रो०हेड्रून ब्रूकनर, प्रो० एन्न फील्दहॉस व डॉ० आदित्य मलिक ।
7. इन द कम्पनी ऑफ गॉड्स: प्रो० सॉन्थाइमर मेमोरियल वॉल्यूम; संपादक-प्रो० हेड्रून ब्रूकनर, प्रो० एन्न फील्दहॉस व डॉ० आदित्य मलिक ।

सेलेक्टेड वर्क्स ऑफ डॉ० आनन्द के० कुमारस्वामी ग्रन्थमाला के अन्तर्गत अब तक एक दर्जन से ज्यादा पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। आलोच्य अवधि में एक और पुस्तक प्रकाशित हुई:-

1. बिब्लियॉग्राफी ऑफ आनन्द कुमारास्वामी; संकलनकर्त्ता-जेम्स क्राउच

इस शृंखला में निम्नलिखित पुस्तकें शीघ्र प्रकाशित होने वाली है:-

1. एसेज़ इन जैन ऑर्ट; सम्पादक- डॉ० रिचर्ड जे० कोहन ।
2. एलिमेंट्स ऑफ बुद्धिस्ट आइकॉनॉग्राफी; सम्पादक- श्री कृष्ण देव ।
3. एसेज़ ऑन म्यूज़िक - संपादक- डॉ० प्रेमलता शर्मा
4. द लेटर्स ऑफ बनारसीदास चतुर्वेदी के लिए सामग्री का संपादन श्री नारायण दत्त ने किया है और इसकी प्रेस कॉपी तैयार है।

कार्यक्रम ङ - क्षेत्र अध्ययन

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत, कलाकोश प्रभाग कुछ ऐसे विशिष्ट क्षेत्रों जैसे, दक्षिण-पूर्व एशिया, पूर्व एशिया, तथा मध्य एशिया आदि पर ध्यान केन्द्रित करता है, जिनके साथ भारत के सांस्कृतिक संबंध घनिष्ट व सक्रिय रहे हैं । वर्ष 2001-2002 के दौरान इस क्षेत्र में हुई प्रगति का विवरण इस प्रकार से है:-

पूर्व एशियाई अध्ययन

इस अवधि में, इस एकक ने निम्नलिखित कार्य किए:-

1. इस एकक ने अजंता पर प्रो० श्लिंगौफ़ का अध्ययन प्रकाशनार्थ हाथ में लिया। प्रो० श्लिंगौफ़ ने इ०गाँ०रा०क०केन्द्र को प्रकाशनार्थ अपनी पाण्डुलिपि देना स्वीकार किया।
2. बुद्धिस्ट कोलोसाई विषय पर संगोष्ठी हेतु संकल्पना पत्र तैयार किया गया।

3. बामियान स्थित बृहदाकार बुद्ध मूर्तियों के विनाश की प्रतिक्रिया स्वरूप इस एकक ने आर्ट रेलिक्स ऑफ अफगानिस्तान विषय पर एक-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया।

दक्षिण-पूर्व एशियाई अध्ययन

आलोच्य अवधि में, डॉ० बच्चन कुमार द्वारा संपादित आर्ट ऑफ-साउथ-ईस्ट एशिया नामक पुस्तक प्रकाशित हुई ।

भूटान की साँस्कृतिक विरासत पर 108 स्लाइडें बनाईं गईं व केंद्र के संग्रह में जोड़ी गईं।

स्लाविक व मध्य एशियाई अध्ययन

इस एकक की स्थापना मध्य एशिया, रूस तथा भारत के बीच ऐतिहासिक संवाद का अध्ययन करने के उद्देश्य से की गई थी । यह एकक इसी विषय पर भारत के बाहर से महत्त्वपूर्ण अनुसन्धान तथा सन्दर्भ सामग्री के संग्रह के लिए प्रयत्नशील रहा है।

तदनुसार, इनियन, (इन्स्टिट्यूट फॉर साइंटिफिक इन्फॉर्मेशन इन द सोशल साइन्स) मॉस्को से, सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अन्तर्गत, रूसी भाषा में अनुसंधान सामग्री, माइक्रोफिश प्रारूप में मँगवाए जाने की व्यवस्था है। इनियन, रशियन एकेडमी ऑफ साइन्स के अंतर्गत है और इस एकेडमी का पुस्तकालय विश्व के श्रेष्ठतम माइक्रोफिश निधियों में हैं। इस सहयोग द्वारा इनियन से 670 माइक्रोफिश प्राप्त हुईं।

विदेश मंत्रालय द्वारा समर्थित एक कार्यक्रम के अन्तर्गत, प्रो० पालट द्वारा ताशकन्द में चयनित, उज़बेकिस्तान के ऐतिहासिक अभिलेखागार का डिजिटिकरण इ०गा०रा०क० केन्द्र में किया जा रहा है । इसमें लगभग 1,70,000 पृष्ठों को स्कैन किया जा चुका है।

प्रकाशन

1. 1996 में केन्द्र में हुए एक सम्मेलन पर आधारित, प्रो० पालट द्वारा सम्पादित एक पुस्तक सोशल आइडेन्टिटीज़ इन रिवॉल्यूशनरी रशिया, यू०के०के पालग्रेव (मैकमिलन) पब्लिशर्स द्वारा मुद्रित हुई।
2. मॉस्को स्टेट यूनीवर्सिटी के डॉ० विगासिन द्वारा ओल्डनबर्ग वॉल्यूम का सम्पादन किया जा रहा है।

जनपद-सम्पदा

(क्षेत्रीय संस्कृतियों से सम्बद्ध जीवन शैली अध्ययन व अनुसन्धान प्रभाग)

जनपद-सम्पदा प्रभाग, कलाकोश प्रभाग के कार्यक्रमों के पूरक के रूप में कार्य करता है। इसका ध्यान शास्त्र की अपेक्षा लघुस्तरीय संसक्त समाजों की समृद्ध व बहुविध धरोहर की कलात्मक अभिव्यक्तियों पर केन्द्रित रहता है । बीच-बीच में, अनेक छोटे-बड़े सांस्कृतिक आन्दोलनों से गुज़रते हुए इन समाजों ने संस्कृति के क्षेत्र में निरन्तरता व परिवर्तनशीलता बराबर बनाए रखी है, जिसके फलस्वरूप अपेक्षाकृत अधिक कठोर, जड़, गतिहीन व संहिताबद्ध शास्त्रीय परम्पराओं को, अपने कायाकल्प के लिए प्रेरणा मिलती रही है । इस प्रभाग की अनुसंधान-गतिविधियों का उद्देश्य, कलाओं का उनके पर्यावरणात्मक, सांस्कृतिक, सामाजिक व आर्थिक परिप्रेक्ष्यों में अन्वेषण है । दैनन्दिन जीवन से जुड़े लोकप्रिय भारतीय शब्द यथा जन, लोक, देश, लौकिक व मौखिक; कार्यक्रमों के निरूपण में यहाँ महत्त्वपूर्ण हैं ।

इस प्रभाग के कार्यक्रमों का विभाजन इस प्रकार से है-

क) **मानवजाति वर्णनात्मक संग्रह:** इन संग्रहों में मूल, अनुकृतियाँ तथा रिप्रोग्राफिक प्रतिलिपियों का एकत्रीकरण; शोध, समीक्षा व प्रस्तुतीकरण हेतु आधारभूत स्त्रोत सामग्री के रूप में किया जाता है।

ख) **बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियाँ एवं गतिविधियाँ:** इस कार्यक्रम के अन्तर्गत दो दीर्घाओं की स्थापना की जा रही है-

(1) आदि-दृश्य, जिसमें भारत व अन्य देशों की प्रागैतिहसिक शैल कला; तथा

(2) आदि-श्रृव्य, जिसमें संगीत व संगीतेतर ध्वनि की अभिव्यक्ति होगी । दूसरे शब्दों में,यह दृष्टि तथा ध्वनि की ज्ञानेन्द्रियों (चक्षु व श्रोत्र) से सम्बन्धित मूलभूत संकल्पनाओं का प्रस्तुतिकरण होगा ।

ग) **जीवन शैली अध्ययन :** इस कार्यक्रम के दो भाग हैं- (1) लोक-परम्परा तथा (2) क्षेत्र सम्पदा । पहले कार्यक्रम के अन्तर्गत, भारत के विभिन्न पर्यावरणात्मक क्षेत्रों व जीवन शैलियों का अध्ययन किया जाता है । दूसरे कार्यक्रम में, विशेष सांस्कृतिक स्थलों के अध्ययन की परिकल्पना है।

घ) **यूनेस्को प्रपीठ :** इ०गा०रा०क०केन्द्र में, 1994 में, सांस्कृतिक विकास के क्षेत्र में एक यूनेस्को प्रपीठ स्थापित की गई । सम्प्रति यह प्रपीठ सांस्कृतिक विरासत की पहचान व अभिवृद्धि : विकास के प्रबन्धन की एक आन्तरिक आवश्यकता विषय पर अध्ययन में संलग्न है ।

वर्ष 2001-2002 में जनपद-सम्पदा प्रभाग द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों में की गई प्रगति का विवरण इस प्रकार है-

कार्यक्रम क: मानवजाति वर्णनात्मक संग्रह

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत, विभिन्न परियोजनाओं में की गई प्रगति इस प्रकार है:-

मानवजाति वर्णनात्मक संग्रहों के सूचीकरण का कार्य प्रारम्भ किया गया है।

1. रबारी टेक्स्टाइल का सूचीकरण किया जा चुका है।

कार्यक्रम ख : बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियाँ एवं गतिविधियाँ

आदिदृश्य : डॉ० बी०एल०मल्ला द्वारा एन एथनो-आर्कियॉलॉजिकल स्टडी ऑफ राक आर्ट परियोजना का कार्य प्रगति पर हैं।

प्रकाशन : भूमण्डलीय शैल कला पर आयोजित सम्मेलन के शोध-पत्रों का प्रकाशन कार्य प्रगति पर है।

संगोष्ठियाँ एवं सम्मेलन

1. 5 सितंबर, 2001 को फैक्ट प्रोफाइल्स प्रिपेरेशन ऑन साइट्स ऑफ देहली विषय पर विशेषज्ञों की एक कार्यशाला का आयोजन किया गया।
2. सांस्कृतिक विरासत शृंखला के अंतर्गत कल्चरल हैरिटेज एक्टिविटी-इवॉल्विंग इम्पलीमेंटेशन स्ट्रेटेजीज़ पर एक संगोष्ठी का आयोजन 27-28 अगस्त 2001 को किया गया।
3. 2-4 जनवरी, 2002 को द सूफ़ी ट्रेडीशन विषय पर एक संगोष्ठी आयोजित की गई । संगोष्ठी किसी स्थान विशेष अथवा मंदिर या मस्जिद की किसी इकाई पर केन्द्रित नहीं थी अपितु उस केन्द्र के आस-पास रहने वाले लोगों की संस्कृति के सामाजिक, आर्थिक, कलात्मक व भक्तिविषयक पक्षों पर पड़े उसके प्रभाव पर केंद्रित थी। इसके माध्यम से सामान्य रूप से भारतीय सूफ़ी परंपरा के सृजनात्मक व समीक्षात्मक संवाद को तथा विशेष रूप से कला व संस्कृति को एक मंच उपलब्ध करवाया गया ।

स्मारकीय व्याख्यान

31 जनवरी व 1 फरवरी, 2002 को पाँचवे एन०के बोस स्मारकीय व्याख्यान का -आयोजन किया गया। व्याख्याता थे। प्रो० ए०सी०भगवती और विषय थे, क्रमश: 1) निर्मल कुमार बोस एंड फील्ड रिसर्च: द नार्थ-ईस्ट इंडियन एक्सपीरिएंस तथा 2) सोशल फॉर्मेशन एंड एथनिक आइडेन्टिटीज़ इन नार्थ-ईस्ट इंडिया: ए प्रिलिमिनरी स्टेटमेंट।

कार्यक्रम ग : जीवन शैली अध्ययन
लोक परम्परा (जीवन शैली अध्ययन)

सहयोगात्मक परियोजनाएँ

क) विगत वर्षों से चल रही निम्नलिखित परियोजनाएँ पूर्ण हुईं:-

1. डॉ० निंगोंबन वसन्त, द्वारा- **मैती परिवार पारंपरिकता से आधुनिकता में रूपांतरण की प्रक्रिया** (द्वितीय चरण)।
2. प्रो० एस०एस० महापात्र द्वारा, **संथाल परगना से संग्रहीत संथाल साहित्य की सटिप्पणीक ग्रन्थ सूची** ।
3. श्री एन० देबेन्द्र सिंह द्वारा, **मैती लोगों के तिथ्यनुसार धार्मिक अनुष्ठान एवं कर्मकाण्ड** ।
4. डॉ० रामाश्रय रॉय द्वारा **मिथिला (उत्तरी बिहार) में प्रचलित संस्कारों का प्रलेखन व विश्लेषण।**

ख) सहयोगात्मक परियोजनाएँ जिन पर कार्य प्रगति पर है:-

1. डी०पी०अग्रवाल द्वारा टेड्रीशनल नॉलेज सिस्टम्स
2. डॉ० मणि शेखर सिंह द्वारा ट्रेडीशन, इनोवेशन एंड ऑथेन्टिसिटी इन फोक आर्ट: एन एथनोग्राफिक स्टडी ऑफ मिथिला पेंटिंग्स
3. डॉ० बी०एन०भट द्वारा फूड एंड फूड हैबिट्स ऑफ सिट्टी ट्राइब
4. डॉ० एस० महापात्र द्वारा कबीर एमिड्स्ट द ट्राइबल पीपल इन छत्तीसगढ़

अन्तर्विभागीय परियोजनाएँ-

इ०गा०रा०क०केन्द्र के विद्वानों द्वारा सम्पादित की जाने वाली परियोजनाओं की प्रगति, इस प्रकार है:-

1. भरमौर, चम्बा (हिमालय प्रदेश) के गद्दी लोगों में दिक् व काल की सांस्कृतिक श्रेणियाँ विषय पर डॉ० मौलि कौशल द्वारा एक मोनोग्राफ पूर्णप्राय: तैयार है।
2. डॉ० नीता माथुर द्वारा शरीर, गर्भाशय तथा बीज के बारे में संथालों का बोध नामक शब्दकोश, पूर्णप्राय: है।
3. यूनेस्को की परियोजना-विलेज इण्डिया पर डॉ० रमाकर पंत एवं डॉ० सुश्री ऋचा नेगी कार्यरत हैं। परियोजना पूर्णप्राय: है।

प्रकाशन

1. नेचर ऑफ मैन एण्ड कल्चर :- सम्पादक प्रो. बी.एन. सरस्वती।
2. विहंगम; खण्ड 8
3. मौखिक महाकाव्य; सम्पादक:- मनोज कुमार मिश्र
4. सेमिनार पेपर्स ऑन संथाल वर्ल्डव्यू; संपादक:- डॉ० नीता माथुर
5. चैण्टेड नैरेटिव्ज़ : द लिविंग ट्रेडिशन ऑफ कथा वाचन संपादक:- डॉ० मौलि कौशल
6. लद्दाख की लोक संस्कृति; संपादक:- श्री प्रेम सिंह जीना

मुद्रणाधीन प्रकाशन:-

1) प्रोवर्ब्स एंड फ़ोकलोर ऑफ कुमाऊँ एंड गढ़वाल;
2) हीलिंग प्रैक्टिसिज़;
3) वॉटर कॉस्मॉलॉजी;
4) एन्थ्रोपॉलॉजी ऑफ़ साउंड ।

कार्यक्रम घ : क्षेत्र सम्पदा (प्रादेशिक धरोहर)

भारत में कुछ प्रदेश/क्षेत्र, ऐसे सांस्कृतिक केन्द्रों के रूप में विकसित हो गए, जिन्होंने विश्व भर लोगों को अपनी ओर आकृष्ट किया । ये स्थान सम्मेलन व स्पन्दन के ऐसे केन्द्र रहे हैं, जिनसे सम्पर्क व गतिशीलता का प्रचार-प्रसार हुआ है । बहुश: कोई मंदिर या मस्जिद, भौतिक व भावात्मक आकर्षण का केन्द्र बना है । अब तक

इन स्थलों का एकांगी अध्ययन काल, इतिहास, धर्म या अर्थशास्त्र प्रभृति दृष्टियों से हुआ है न कि उस समग्रपरक दृष्टि से, जिससे सृजनात्मक कलाओं के क्षेत्र में बहुविध कार्यकलाप संचालित होते हैं । अत: क्षेत्र-सम्पदा के अन्तर्गत किसी मन्दिर विशेष या उसकी इकाइयों के नहीं, अपितु, उस केन्द्र विशेष के समस्त भक्तिविषयक, कलात्मक, भौगोलिक व सामाजिक पक्षों को परस्पर जोड़ने वाली प्रक्रिया के अध्ययन का परिकल्पन किया गया है इ०गा०रा०क०केन्द्र ने ऐसे दो सांस्कृतिक केन्द्रों को गहन अध्ययन के लिए चुना है- ब्रज व बृहदीश्वर

ब्रज प्रकल्प

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत दो प्रकाशन मुद्रणाधीन हैं-

1) भक्तिरसामृतसिन्धु, खण्ड-2 : संपादक व (हिन्दी में) अनुवादक- डॉ० प्रेमलता शर्मा

2) डॉ० डेविड हॉबरमैन द्वारा भक्तिरसामृतसिन्धु के अंग्रेजी अनुवाद की कैमरा रेडी कॉपी तैयार की जा चुकी है । प्रकाशन-प्रक्रिया प्रारम्भ हो चुकी है।

बृहदीश्वर

1) डॉ० एफ० ले आर्नल्ट द्वारा आइकॉनोग्राफी ऑफ द बृहदीश्वर टेम्पल विषय पर मोनोग्राफ प्रकाशित हो चुका है। सम्पादक :- डॉ. एल.एम. गुजराल।

2) डॉ० आर० नागस्वामी द्वारा आइकॉनोग्रीफी ऑफ बृहदीश्वर पुस्तक पर कार्य चल रहा है।

3) बृहदीश्वर: द मॉन्यूमेंट एंड द लिविंग ट्रेडीशन (संगोष्ठी-पत्र) पर कार्य चल रहा है।

4) बृहदीश्वर मंदिर के भित्ति-चित्रों के अध्ययन की सूची तैयार है।

कार्यक्रम ड : यूनेस्को प्रपीठ

यूनेस्को प्रपीठ द्वारा सांस्कृतिक विकास के क्षेत्र में सांस्कृतिक विरासत की पहचान व अभिवृद्धि : विकास के प्रबन्धन की एक आन्तरिक आवश्यकता विषय पर फील्ड वर्क पर आधारित, एक परियोजना का कार्य भारत के सभी राज्यों व संघ शासित क्षेत्रों के 87 गाँवों में चल रहा है । सभी जगह से रिपोर्टें प्राप्त हो चुकीं हैं । अंतिम रिपोर्ट लिखी जा रही है और इसके शीघ्र पूरा होने की आशा है।

कलादर्शन
(प्रचार-प्रसार विभाग)

कलादर्शन विभिन्न संस्कृतियों, शास्त्रों, सामाजिक स्तरों व नानाविध कलाओं के बीच सृजनात्मक संवाद हेतु स्थान व मंच की सुविधा उपलब्ध करवाता है। यह प्रभाग इ. गाँ. रा.क.केन्द्र के उद्देश्यों की सफलता हेतु एकीकृत विषयों व संकल्पनाओं पर प्रदर्शनियाँ, अन्तर्विषयक संगोष्ठियाँ एवं प्रस्तुतियाँ आयोजित करता है। वर्ष 2001-2002 के दौरान इ. गा. रा. क. केन्द्र ने कलादर्शन प्रभाग के सहयोग से निम्नलिखित कार्यक्रमों का आयोजन किया:

प्रदर्शनियाँ

(1) **विश्युअल ट्रिब्यूट्स टू भाबेशदा** :- इस प्रदर्शनी का आयोजन इ. गा. रा. क. केन्द्र ने विख्यात कलाकार, कला-शिक्षक, चित्रकार व मूर्त्तिकार श्री बी. सी. सान्याल का उनके 100 वें जन्मदिवस पर अभिनन्दन हेतु किया था। देश भर के 175 कलाकारों मूर्त्तिकारों ने अपनी कृतियाँ %दृश्य श्रद्धांजलि% के रूप में उन्हें समर्पित कीं। इस अवसर पर 600 से ज्यादा लोग उपस्थित थे, जिनमें पत्रकार, कलाकार, राजनायिक , सरकारी अधिकारी व अन्य गण्यमान्य अतिथि शामिल थे। श्री सान्याल के घनिष्ट मित्रों श्रीमती मीरा प्रसाद व श्रीमती रेबा सोम ने संगीत प्रस्तुत किया व डॉ० रोहित प्रसाद ने श्री सान्याल पर लिखी अपनी एक रचना का वाचन किया। प्रदर्शनी 28 अप्रैल, 2001 तक चली। एन्ड्रेटा में एक दीर्घा खोलने के उनके सपने को साकार करने में आर्थिक सहायता के उद्देश्य से, कलाकार-समाज ने, श्री सान्याल को कई चित्र भेंट किए।

(2) **ग्लिप्सेज़ ऑफ चाइना:** इ. गाँ. रा. क. केन्द्र के सहयोग से चीन गणराज्य के दूतावास ने %ग्लिंप्सेज़ ऑफ चाइना% नामक छाया-चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन 24 सितम्बर, 2001 को, केन्द्रीय विधि, न्याय व कंपनी मामलों के मंत्री श्री अरूण जेटली, तथा चीन गणराज्य के भारतीय राजदूत महामहिम हुआ जुनदुओ ने संयुक्त रूप से किया। प्रदर्शनी 30 सितम्बर, 2001 तक चली।

(3) **सेलेब्रेटिंग क्रिएटिविटी:** प्रसिद्ध नर्तक स्वर्गीय उदय शंकर के व्यक्तित्व कृत्तित्व पर आयोजित इस प्रदर्शनी का उद्घाटन केन्द्रीय पर्यटन व संस्कृति के माननीय मंत्री श्री जगमोहन ने 7 दिसंबर, 2001 को किया। यह 30 दिसंबर, 2001 तक चली। इस दौरान प्रदर्शनी के साथ-साथ, उदय शंकर पर व्याख्यानों व फिल्मों के कार्यक्रमों की एक श्रृंखला भी चलती रही।

(4) लंदन में बसी एक कलाकार मीना पटेल की **पोर्सेलीन पेंटिग्स** की एक प्रर्दशनी का भारत के महामहिम राष्ट्रपति श्री के. आर. नारायणन ने 8 जनवरी, 2002 को उद्घाटन किया और यह प्रदर्शनी 15 जनवरी, 2002 तक चली।

(5) **डांसिंग मेडिन्स: ए सागा ऑफ तमाशा थिएटर:** शिरीष शेटे की छायाचित्र-प्रदर्शनी का विषय था- तमाशा रंगमंच की प्राचीन कला, जो पेशवाओं के काल में विकसित हुई पर अब लुप्तप्राय है। यह 15 से 24 मार्च, 2002 तक चली।

फिल्म शो:-

इ.गाँ.रा.क. केन्द्र के सांस्कृतिक अभिलेखागार से निम्नलिखित फिल्मों का प्रदर्शन किया गया-

1. **टेम्पल इन्स्ट्रुमेंट्स ऑफ केरल:** आर.-सरथ द्वारा निर्देशित यह फिल्म 11 अप्रैल, 2001 को दिखाई गई।
2. **सेंट्रल एशिया:** क्रॉस रोड ऑफ कल्चर-यूनेस्को निर्मित यह फिल्म 22 मई, 2001 को दिखाई गई।
3. जोसेफ कैम्पबेल द्वारा निर्देशित फिल्म **सैक्रिफाइस एण्ड ब्लिस** का प्रदर्शन 30 मई, 2001 को किया गया ।
4. **पंडवानी** पर एक डॉक्यूमेंट्री 30 अगस्त, 2001 को दिखाई गई।
5. डी. राम नारायण द्वारा निर्मित, तमिलनाडु के जीवन्त रंगमंच-**थेरूकुट्टु** पर आधारित फिल्म 13 सितम्बर, 2001 को दर्शाई गई। इसमें महाभारत के मिथकों व आख्यानों को बताने वाले विभिन्न शैलीगत प्रदर्शनों को दिखाया गया था।
6. श्री चन्द्र मणि द्वारा निर्देशित फिल्म **आर्टिस्टिक हाइट्स** का प्रदर्शन 4 अक्तूबर, 2001 को किया गया।
7. **अनुकम्पन:-** बलाका घोष द्वारा निर्देशित, छत्तीसगढ़ राज्य के रायगढ़ की कथक नृत्य परम्परा (1924-47) पर आधारित यह डॉक्यूमेंट्री 8 नवम्बर, 2001 को दिखाई गई।
8. **पूर्व-उत्तर पोस्ट:-**श्याम बेनेगल व ज़फ़र हाई द्वारा निर्देशित इस डॉक्यूमेंट्री में भारत के आठ महत्त्वपूर्ण स्थलो व भवनों के विषय में बताया गया है। यह 23 नवम्बर, 2001 को दिखाई गई।
9. इ.गाँ.रा.क.केन्द्र के माटी घर में 8 से 30 दिसम्बर, 2001 तक रोज़ाना 3 बजे उदय शंकर की कोरियॉग्राफी के वीडियो दिखाए गए।
10. इंडिया हैबिटेट सेंटर के सहयोग से 11 दिसंबर 2001 को उदय शंकर निर्मित **कल्पना** पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन प्रसिद्ध सितार वादक और उदय शंकर के अनुज पं० रवि शंकर ने किया। इसमें उदय शंकर की सृजनात्मकता और एक नवीन माध्यम को अपनाने के उनके वैदुष्य की चर्चा की गई। तदनन्तर , फिल्म कल्पना का प्रदर्शन भी हुआ।
11. **किंग खाण्डोबा :-** गुंथेर सॉन्थाइमर द्वारा निर्देशित, भारत के एक लोक देवता के जीवन के परिदृश्यों पर बनी यह फिल्म 7 फरवरी, 2002 को दिखाई गई।

बाल-कार्यक्रम

1. दिल्ली के तीस हज़ारी के क्वीन्स मेरी स्कूल की छात्राओं के लिए 6 से 10 अगस्त, 2001 तक **पेपर मैशी पर एक कार्यशाला** का आयोजन किया गया जिसमें नवीं व ग्यारहवीं कक्षाओं की लगभग 70 छात्राओं ने भाग लिया ।
2. **लव योअर बुक्स-सेव देम:-** काग़ज बनाने व संरक्षण पर यह कार्यशाला, सेंट कोलम्बस स्कूल के छात्रों के लिए आयोजित की गई। यह 22 से 28 अगस्त,2001 तक चली ।

सार्वजनिक व्याख्यानः-

आलोच्य वर्ष में 31 सार्वजनिक व्याख्यान प्रस्तुत किए गए । इनकी सूची अनुबन्ध -5 पर है।

स्मारकीय व्याख्यान

1. डॉ० विश्वनाथ त्रिपाठी ने इस वर्ष 19 अगस्त को18वाँ आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी स्मारकीय व्याख्यान प्रस्तुत किया। विषय था-**आचार्य द्विवेदी का निज प्रतिवाद** । इस अवसर पर, हिंदी के प्रसिद्ध पत्रकार श्री प्रभास जोशी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। व्याख्यान का आयोजन आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी स्मृति न्यास के सहयोग से किया गया।

अन्तर्विभागीय व्याख्यानः-

1. 3 जुलाई, 2001 को कलानिधि प्रभाग के श्री के०डी०एन० सिंह ने इ०गा०रा०क०केन्द्र के स्लाइड एकक व उसके संग्रह पर एक व्याख्यान प्रस्तुत किया।
2. कलानिधि की सुश्री मेखला मणि ने 2.30 बजे कृष्ण इन आर्ट्स विषयक एक स्लाइड-प्रस्तुति प्रदान की।
3. स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में एक कवि गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें केंद्र के लगभग 10 सदस्यों ने अपनी रचनाओं का वाचन किया ।
4. 4 अक्तूबर, 2001 को कलाकोश प्रभाग के डॉ० सुधीर कुमार लाल ने क्राइम एण्ड पनिशमेण्ट इन कौटिलीय अर्थशास्त्र विषय पर एक व्याख्यान प्रस्तुत किया। डॉ० सम्पत् नारायण ने अध्यक्षता की।
5. कलादर्शन के श्री राजेश सिंह ने 24 जनवरी, 2002 को द आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर ऑफ एलिफॅण्टा विषय पर एक सचित्र व्याख्यान प्रस्तुत किया । डॉ० मधु खन्ना ने अध्यक्षता की ।

कार्यशालाएँ एवं संगोष्ठियाँः-

1. 2 नवम्बर, 2001 को श्री संजय गोयल ने डिजिटल मैन्यूस्क्रिप्ट लाइब्रेरी पर एक कार्यशाला आयोजित की।
2. 23 मार्च, 2002 को वैल्यूज़ इन एवरिडे लाइफ पर एक दो-दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई।
3. 2 फरवरी,2002 को मोडालिटीज़ फॉर इम्प्लिमेंटेशन ऑफ नेशनल मैन्यूस्क्रिप्ट प्रोजेक्ट का आयोजन किया गया । प्रो०के०टी० पांडुरंगी प्रमुख वक्ता थे।

इ०गाँ०रा०क०केन्द्र में महत्वपूर्ण अतिथियों का आगमनः-

1. अमेरिका के संयुक्त राष्ट्र संगठन के अध्यक्ष तथा न्यूयॉर्क के मेट्रोपोलिटन म्यूज़ियम ऑफ आर्ट के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री विलियम एच० ल्यूएर्स, अपनी पत्नी, सिविल सोसाइटी फाउंडेशन की अध्यक्षा सुश्री वेन्डी डब्ल्यू ल्यूएर्स सहित, 14 फरवरी, 2002 को इ०गाँ०रा०क०केन्द्र में पधारे।
2. 26 फरवरी 2002 को फिनलैण्ड की एकेडेमिज़ ऑफ साइन्स एंड लेटर्स के महासचिव प्रो० हाइकी सोलिनी कला केन्द्र में पधारे।

माटी घर

निम्नलिखित संस्थाओं ने वित्तीय वर्ष 2001–2002 में माटी घर किराए पर लिया:–

इन्टैक	–	रू० 71,000/–
अपयाराव गैलरी	–	रू० 10,000/–
गैलरी 88	–	रू० 10,000/–
आर्ट म्यूजिग्स	–	रू० 10,000/–
दिल्ली स्टडी	–	रू० 10,000/–
	कुल	**रू० 1,11,000/–**

सूत्रधार
(प्रशासन एवं वित्त प्रभाग)

इं०गा०रा०क०केन्द्र का प्रशासनिक स्कन्ध सूत्रधार है। यह अन्य सभी प्रभागों व एककों को प्रबन्धकीय, संगठनात्मक सहायता, सेवाएं तथा आपूर्ति प्रदान करता है। केन्द्र के नीति-निर्धारण, विभिन्न कार्यक्रमों व गतिविधियों में समन्वय तथा संस्था का लेखा-अनुरक्षण व प्रबन्धन आदि गतिविधियों के प्रमुख सम्पादनकर्त्ता के रूप में सूत्रधार कार्य करता रहा।

क) कार्मिक

31 मार्च, 2002 को केन्द्र के अधिकारियों व शोध अध्येताओं की सूची अनुबन्ध 3 व 4 पर दी गई है।

ख) आपूर्ति एवं सेवाएँ

आपूर्ति व सेवाएँ एकक, केन्द्र के सभी अकादमिक प्रभागों को सम्भारतंत्रीय व सम्बद्ध सहायता प्रदान करता रहा । इस एकक ने वर्ष के दौरान अनेक राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों, सम्मेलनों, कार्यशालाओं व प्रदर्शनियों के आयोजन में सहायता दी। केन्द्र के कार्यों के सुचारू रूप से चलते रहने के लिए, इसने सभी सम्बद्ध मंत्रालयों/ विभागों तथा अन्य संगठनों से समन्वय बनाए रखा।

ग) शाखा कार्यालय

वाराणसी: 1988 में कलाकोश के एकक के रूप में रूप में स्थापित, वाराणसी का शाखा कार्यालय, एक अवैतनिक समन्वायक प्रो. आर.सी.शर्मा की देखरेख में, अपने नियमित कर्मचारियों व अनुसन्धानकर्ताओं के माध्यम से कार्यरत रहा। विशेषज्ञों की सहायता से यह कार्यालय, केन्द्र की परियोजनाओं के लिए व्याख्यान, तथा परिचर्चाएँ आयोजित करने के साथ-साथ शोध संबंधी गतिविधियों तथा डेटा संग्रह के काम में संलग्न रहा।

गुवाहाटी- वर्ष 2000 में स्थापित इ०गाँ०रा०क०केन्द्र का गुवाहाटी एकक अवैतनिक समन्वायक, अरूणाचल विश्वविद्यालय के भूतपूर्व उप-कुलपति प्रो० ए०सी०भगवती के निर्देशन में फील्ड-स्टेशन के रूप में कार्य करता रहा।

घ) क्षेत्रीय कार्यालय

23 जुलाई, 2001 को माननीय पर्यटन व संस्कृति मंत्री श्री अनंत कुमार ने इ०गा०रा०केन्द्र के दक्षिणी क्षेत्रीय केन्द्र का उद्घाटन किया ।

केन्द्र के न्यासी श्री पी०वी०कृष्णा भट्ट इस क्षेत्रीय केन्द्र के समन्वायक चुने गए।

ङ) वित्त एवं लेखा

31.03.2001 को समाप्त हुए वित्तीय वर्ष के लेखों को लेखा परीक्षा व प्रमाणन हेतु, केन्द्रीय राजस्व के लेखा परीक्षा महानिदेशक को भेज दिया गया है।

भारत सरकार ने केन्द्र को निम्नलिखित रियायतें/लाभ प्रदान करते हुए, अधिसूचनाएँ जारी की हैं।

1. न्यास की आय को कर-निर्धारण वर्ष 2001-2002 से 2003-2004 तक आयकर से मुक्त कर दिया है। आयकर अधिनियम की धारा 10(23) (सी)(IV) के अन्तर्गत आवश्यक कर-मुक्ति दे दी गई है। द्रष्टव्य- 21 मार्च, 2001 की अधिसूचना सं० 76/2001 (मि० सं० 197/39/2001-आई टी ए/1)

2. आयकर अधिनियम की धारा 35(i) (iii) के अन्तर्गत, अधिसूचना सं० 1884 (मि०सं०डी०जी०आई०टी०(ई) एन०डी०- 22/35(i) (iii) /90-01 दिनांक 8.12.98 के द्वारा 1.4.98 से 31.3.2000 तक न्यास को एक संस्था घोषित किया गया है, जिससे सामाजिक विज्ञान आदि में अनुसन्धान के लिए केन्द्र को दी गई कोई भी राशि आयकर अधिनियम की धारा 35 (i) (iii) के अन्तर्गत, दाता की आय में से कटौती की पात्र होगी। आयकर अधिनियम की इस छूट की पूर्वपीठिका के रूप में, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने इस संस्था को आयकर नियम, 1962 के नियम 6 के अन्तर्गत मान्यता प्रदान की है। इस मान्यता के आधार पर, केन्द्र को आयात पर सीमा शुल्क से छूट मिल सकती है और आयात प्रक्रिया में भी सुविधा प्राप्त हो सकती है। इस मंत्रालय ने, इस मान्यता की अवधि 1.4.2000 से 31.3.2003 तक बढ़ा दी है पर अधिसूचना अभी प्रतीक्षित है।

3. केन्द्र को किसी कलाकृति, पाण्डुलिपि, रेखाचित्र, छायाचित्र मुद्रण आदि की बिक्री से, किसी व्यक्ति को होने वाला पूंजीगत लाभ, आयकर अधिनियम की धारा 47(ix) के अन्तर्गत, निर्धारण-वर्ष 2000-2001 से 2004-2005 तक के लिए आयकर से मुक्त कर दिया है ।

   द्रष्टव्य: भारत सरकार, वित्त मंत्रालय (राजस्व विभाग) की दिनांक 24 मई, 2000 की अधिसूचना सं० 11375 (सं०207/1/197-आईटीए- II)

4. व्यक्तियों द्वारा केन्द्र को किया गया कोई भी दान, आयकर अधिनियम की धारा 80 (जी) के अन्तर्गत, 50 प्रतिशत तक छूट का पात्र होगा । केन्द्र को यह छूट 31.03.2005 तक दी गई है; द्रष्टव्य-आयकर निदेशक(छूट) का दिनांक17.01.2002 का पत्र संख्या डी०आई०टी०(छूट)2001-2002/I-379/1997।

च) न्यास की निधियों का निवेश:-

वर्ष 2001-2002 के दौरान सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिष्ठानों एवं बैंकों में, दीर्घावधिक आधार पर 20 करोड़ रुपये (13 करोड़ रुपये समय-समय पर और 7 करोड़ रुपये नवीन) तथा अल्पावधिक आधार पर 12 करोड़ रुपये (समय-समय पर) का निवेश किया गया । ये निवेश क्रमश: दीर्घावधिक निवेश समिति एवं अल्पावधिक निवेश समिति के अनुमोदन से किए गए ।

छ) आवास

केन्द्र का प्रधान कार्यालय सेन्ट्रल विस्ता मेस और नं० 3, राजेन्द्र प्रसाद रोड, नई दिल्ली में कार्यशील रहा । सी०वी०मेस भवन में केन्द्र के विभिन्न प्रभाग व एकक कार्य करते रहे । डॉ०राजेन्द्र प्रसाद मार्ग, नं० 5 में केन्द्र की नई इमारत बन कर तैयार हो गई है तथा 19 नवम्बर, 2001 को **माननीय प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी** ने इसका उद्घाटन किया।

ज) इन्दिरा गांधी स्मारकीय अध्येतावृत्ति

कलाओं, मानविकी-विषयों तथा संस्कृति के क्षेत्र में सृजनात्मक एवं समालोचनात्मक कार्य में अपने आप को स्वतंत्रतापूर्वक संलग्न रखने के लिए प्रख्यात एवं अत्यन्त प्रातिभ व्यक्तियों को समुचित अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से, इं०गा०रा०क०केन्द्र ने श्रीमती इन्दिरा गांधी के नाम से स्मारकीय अध्येतावृत्ति की एक योजना प्रारम्भ की है । ये अध्येतावृत्तियाँ, किसी भी विषय के ऐसे विद्वानों/सृजनधर्मी कलाकारों के लिए हैं, जिनके पास सृजनात्मक परियोजनाएँ हैं और जो बहुविषयक अथवा संकुल-सांस्कृतिक स्वरूप का शोध कार्य करने को तत्पर हैं। आवेदकों को ऐसे सृजनात्मक अथवा समालोचनात्मक कार्य का प्रामाणिक अनुभव होना चाहिए, जो विशुद्ध अकादमिक स्वरूप के संकुचित क्षेत्र तक ही सीमित न हो । अध्येता, भारत के अन्दर ही, अपनी पसन्द के किसी भी स्थान पर, कार्य करने को स्वतन्त्र होंगे । किसी भी समय, वृत्ति प्राप्त करने वाले अध्येताओं की संख्या छह से अधिक नहीं होगी । प्रत्येक अध्येता को 12,000/- रूपये प्रतिमाह की वृत्ति, 2500/- रूपये की सचिवीय सहायता तथा दो वर्ष की अवधि के लिए 25,000/- रूपये आकस्मिक व यात्रा भत्ते के रूप में दिए जाऐंगे ।

वर्ष 2001 के लिए तीन अध्येता वृत्तियाँ, प्रो० सुनीता जैन, प्रो० गोपी चंद नारंग व डॉ० एस० सत्यनारायणन् को प्रदान की गईं। इनकी क्रमश: परियोजनाएँ इस प्रकार हैं- इण्डियन पोएट प्रिंटर्स : ए स्टडी, 1900-2000 ; ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ केटेलॉरर्स फर्स्ट एवर ग्रामर ऑफ हिंदुस्तानी एंड इट्स रेलेवेन्स टु द प्रेजेंट डे हिंदी एंड उर्दू; तथा इन्वेस्टिगेशन इन टु क्रिएटिविटी इन इंडियन म्यूज़िक।

इस अध्येतावृत्ति की स्थापना 1996 में हुई थी तथा उस वर्ष यह पुणे के विख्यात मराठी व अंग्रेजी लेखक श्री दिलीप चित्रे को दी गई थी । वर्ष 1997 में, दो प्रसिद्ध महानुभावों-विख्यात परंपरागत संगीतज्ञ उस्ताद आर० फहीमुद्दीन डागर और अंग्रेजी व मलयालम के विख्यात लेखक प्रो० के अय्यप्पा पणिक्कर, को ये वृत्तियाँ दी गईं । वर्ष 1998 में दो सुपात्र अध्येताओं-नृतत्त्वशास्त्री डॉ० (श्रीमती) पद्मा एम० सारंगपाणि तथा इण्डोनेशिया के संगीतज्ञ प्रो० बामबंग सुनर्तो को ये अध्येतावृत्तियाँ दी गईं । 1999 में, दो लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों- उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर में, इतिहास के प्रोफेसर, प्रो० के०एस० बहेरा तथा स्कूल ऑफ प्लानिंग एण्ड आर्किटेक्चर की प्रो० नलिनी माधव ठाकुर को इन वृत्तियों के लिए चुना गया। वर्ष 2000 के लिए दो ख्यातनामा विद्वानों; प्रो० डी०डी०शर्मा और प्रो०एस०एन० गोस्वामी को ये अध्येतावृत्ति प्रदान की गई है । योजना के अन्तर्गत, प्रो० डी०डी० शर्मा उत्तराखण्ड के सांस्कृतिक इतिहास पर कार्य करने का प्रस्ताव करते हैं और प्रो० एस०एन० गोस्वामी द्वारा प्रस्तावित परियोजना है- पूर्वोत्तर भारत के उत्सव: एक समीक्षात्मक अध्ययन ।

लघु-अवधिक शोध परियोजना:-

इ०गा०रा०क०केन्द्र ने भारतीय कला, मानविकी, लोक-साहित्य व अन्य संबद्ध बहु-आयामी विषयों में शोध के इच्छुक युवा अध्येताओं व मध्य-व्यावसायिकों को लाभान्वित करने के लिए लघु-अवधिक शोध परियोजनाएँ स्थापित की है। हर विषय से संबद्ध छ: परियोजनाएँ हर साल देने का प्रस्ताव है। इसकी अनुदान राशि 75,000 रुपए है तथा अवधि एक वर्ष ।

भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी

ए डिस्क्रिप्टिव कैटलॉग ऑफ इंडियन एस्ट्रोनॉमिकल एण्ड टाइम मेशरिंग इंस्ट्रूमेंट्स पर प्रो० एस० आर० सरमा की इ०गाँ०रा०क०केन्द्र से सम्बद्ध परियोजना, सितंबर, 2001 में पूर्ण हुई और उनकी परियोजना की एक ड्राफ्ट-रिपोर्ट भी प्रस्तुत की गई।

साँस्कृतिक सूचना विज्ञान प्रयोगशाला

विभिन्न कलाओं एवं सूचना प्रौद्योगिकी के संयोग से नूतन प्रौद्योगिकी तथा साँस्कृतिक प्रलेखन के प्रयोग, अनुप्रयोग, विकास एवं प्रदर्शन में उल्लेखनीय सफलताएँ प्राप्त हुई हैं। परियोजनाओं में ऐसे नये डिजाइन-आदर्श, विकास-प्रक्रियाएँ तथा पुन:प्रयोज्य सॉफटवेयर उपकरणों का परिकल्पन, विकास तथा अनुप्रयोग होने लगा है जो कि उच्चस्तरीय बहुमाध्यमिक सामग्री-निर्माण के लिए विशेष रूपेण अनुकूल है। यू एन.डी.पी. परियोजना के संपूर्ण होने के पश्चात्, इ.गा.रा.क.केन्द्र ने सी.आई.एल की गतिविधियों को जारी रखने का निर्णय लिया। पर अब, केन्द्र इसे केवल आंशिक अनुदान देता है और शेष अनुदान का प्रबंध सरकारी एवं अन्य सहायक संस्थाओं से सहयोगात्मक परियोजनाओं द्वारा किया जाता है। सी.आई.एल. की मुख्य गतिविधियाँ हैं -प्रायोजित परियोजनाओं की पूर्ति द्वारा नवीनतम प्रौद्योगिकी के उपयोग से सांस्कृतिक सूचनाओं का प्रचार-प्रसार, अंतर्विभागीय सी.डी.रोम परियोजनाओं का वितरण तथा वेबसाइट।

अन्तर्विभागीय सी.डी.रोम परियोजनाएँ

गीत गोविन्द :-

जयदेव द्वारा 12वीं शताब्दी में संस्कृत में लिखित गीत-गोविंद मध्ययुगीन भारत की सर्वोत्कृष्ट ललित कविता है। इसकी शब्द-योजना एक दृश्यात्मक, श्रव्यात्मक एवं गत्यात्मक अनुभव को उद्‌बुद्ध करती है। कविता स्वाभाविक रूप से भारतीय कलात्मक परंपरा में एक बहुमाध्यमिक रचना है। गीत-गोविंद अनन्त सुदंरता की रचना है। अपनी अभिव्यक्ति के साथ ही यह कविता भारत के सभी भागों में व्याप्त हो गयी। जहाँ-जहाँ यह पहुँची अपनी एक स्थायी एवं गहरी छाप छोड़ती गयी। आज भी यह सर्वसाधारण, कवियों, कलाकारों, संगीतज्ञों, नर्तकों एवं उपासकों की कल्पना को प्रेरित कर रही है।

इ०गा०रा०क०केन्द्र एवं ज़िरॉक्स पालो ऐल्टो अनुसंधान केन्द्र द्वारा सयुंक्त रूप से एक प्रदर्शनी "गीत गोविंद मल्टीमीडिया एक्सपीरियंस" लगाई गई थी । इसकी संकल्पना कला एवं मानविकी विषयों के पारस्परिक अन्तर एवं बहुविषयक अध्ययन की मूर्धन्य अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विदुषी डॉ० कपिला वात्स्यायन द्वारा की गई । प्रदर्शनी गीत गोविंद के 24 गीतों में से केवल 6 गीतों पर केन्द्रित थी।

- गीत-गोविंद के सभी स्टॉलों (के-1 से के-6)के सीडी रोम के प्रारूप तैयार किए गए ।
- दो कियॉस्क के लिए टूल-टिप को संशोधित किया गया।

देवनारायण

यह सीडी रोम पश्चिमी भारत (मुख्यत:राजस्थान) के इस मौखिक काव्य पर केन्द्रित होगा जो कि कागज़ की बड़ी कुंडलियों या फड़ पर चित्रित है। भोपा नामक गायक, कथा को नृत्य एवं अभिनय द्वारा प्रकट करता है। इसके माध्यम से दृश्य-बिम्ब, कथा के गाए हुए प्रदर्शन एवं श्रोताओं की प्रतिक्रियाओं के अन्तर्सम्बन्धों को पुनर्निर्मित किया जाएगा।

- विद्वान प्रो० आदित्य मलिक, श्री श्रीलाल जोशी तथा श्री कल्याण जोशी ने अपने केन्द्र में आगमन के समय परियोजना को मॉनीटर किया ।
- विषय विशेषज्ञ द्वारा पाठ की प्रस्तावना प्राप्त हुई।

टू पिल्ग्रिम्स

पेंटिंग्स ऑफ एलिजाबेथ सास ब्रूनर एण्ड एलिजाबेथ ब्रूनर

सत्तर वर्ष से भी अधिक समय भारत में व्यतीत करने वाली हंगरी की दो महान चित्रकारों पर यह बहुमाध्यमिक डेटाबेस आधारित है। 1920के दशक में हंगरी की एक माँ-बेटी की यह जोड़ी(एलिजाबेथ सास ब्रूनर और एलिजाबेथ ब्रूनर) आध्यात्मिकता की खोज में भारत आईं थीं। एलिजाबेथ सास ब्रूनर के चित्रों में भू-दृश्य, प्रतीक, हिमालय के दृश्य, खिलते पेड़, ग्राम्य जीवन तथा शास्त्रीय स्थापत्य शामिल है। एलिजाबेथ ब्रूनर के चित्रों में नेताओं, विद्वानों, कलाकारों तथा सन्तों के चित्र, ग्राम्य दृश्य, भू-दृश्य, प्रकृति तथा प्राचीन भारतीय स्थापत्य आदि विषय प्रमुख हैं।

आलोच्य अवधि में अवैतनिक परामर्शदाताओं-सुश्री फ्रैंसुआ रियो तथा सुश्री लारेन्स बेस्तित ने परियोजना पर कार्य किया।

इ.गा.रा.क.केन्द्र वेबसाइटः-

डब्लयू डब्लयू. आईजीएनसीए. एनआईसी.इन

इस वर्ष वेबसाइट में निम्नलिखित सामग्री का परिवर्द्धन किया गया।

क) छवियाँ : ए.सी.एस.ए.एं संग्रह की 2975 छवियाँ।
ब्रूनर्स, मास्क, गीत गोविंद तथा उदय शंकर की 2982 छवियाँ।

ख) ऑडियो : राग जोगवन्ती, मुक्तेश्वर मंदिर का भक्ति संगीत तथा देवनारायण।

ग) विडियो : गीत गोविन्द, कुडियाट्टम तथा बृहदीश्वर मंदिर।

घ) पाठ : २ पुस्तकें : भारत का पाण्डुलिपि सर्वेक्षण।

ङ) **परियोजना:** उड़ीसा के मंदिरः- प्रस्तावना, इतिहासपरक एवं धा*मक पृष्ठभूमि तथा शब्दावली वेबसाइट पर डाले गए। कामपरक छवियों तथा मंदिरों एवं पत्रों के कालक्रमिक विकास पर कार्य प्रगति पर है।

- गीतगोविन्द-प्रस्तावना
- इलस्ट्रेटिड जातक स्टोरीज़
- हेरिटेज ऑफ आगरा एण्ड फतेहपुर सीकरी

अन्य गतिविधियाँ

क. सूत्रधार संभाग हेतु पर्सनल इन्फॉर्मेशन सिस्टम का विकास।

ख. इ.गा.रा.क.केन्द्र के कम्प्यूटर प्रयोक्ताओं को तकनीकी सहयोग

ग. क्षेत्रीय अधिवेशन/कार्यशाला/संगोष्ठी/व्याख्यान

- एक्ज़ास्टिव सर्वे एण्ड डॉक्यूमेण्टेशन ऑप हम्पी
- हम्पी में कार्यशाला
- डिजिटल मैन्यूस्क्रिप्ट लाईब्रेरी पर कार्यशाला

- एस.पी.ए. के छात्रों एवं शिक्षकों हेतु संगोष्ठी
- डी.ई.एस.आई.डी.ओ.सी. के लिए कार्यशाला
- जी.पी.आई.आई.टी. नोएडा में डिजिटल लाइब्रेरी पर प्रदर्शन-व्याख्यान
- भोपाल में राजीव गांधी शिक्षा मिशन हेतु कार्यशाला।

अनुबन्ध-1

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
न्यासी मण्डल
(31.3.2002)

1. डॉ० लक्ष्मीमल्ल सिंघवी — अध्यक्ष
   18, विलिंग्डन क्रिसेण्ट
   नई दिल्ली-110 001

2. श्री आर० वेंकटारामन
   5, सफ़दरजंग रोड
   नई दिल्ली-110 011

3. श्री पी०वी० नरसिम्हा राव
   9, मोती लाल नेहरू मार्ग
   नई दिल्ली-110 011

4. श्री जगमोहन
   माननीय पर्यटन व संस्कृति मंत्री
   पर्यटन व संस्कृति मंत्रालय
   शास्त्री भवन
   नई दिल्ली-110 001

5. श्री अनन्त कुमार
   माननीय शहरी विकास व गरीबी उन्मूलन मंत्री
   शहरी विकास व गरीबी उन्मूलन मंत्रालय
   निर्माण भवन
   नई दिल्ली-110 001

6. श्रीमती सोनिया गांधी
   10, जनपथ
   नई दिल्ली-110 011

7. प्रो० यशपाल
11- बी, सुपर डीलक्स फ्लैटस
सेक्टर-15 ए
नोएडा, उत्तर प्रदेश

8. श्री आबिद हुसैन
मकान नं० 237
सेक्टर-15 ए
नोएडा, उत्तर प्रदेश

9. पं० भीमसेन जोशी
कलाश्री, 36
लक्ष्मी पार्क कॉलोनी
पुणे, महाराष्ट्र

10. प्रो० विद्यानिवास मिश्र
एम-3, बादशाह बाग
निकट सिगरा, वाराणसी
उत्तर प्रदेश-221 002

11. डॉ० एच० नरसिम्हैया
अध्यक्ष,
द नेशनल एज्यूकेशन सोसायटी ऑफ कर्नाटक
द नेशनल कॉलेज, बसवनगुडी
बंगलौर-560 004

12. श्री एम० वी० कामत
कल्याणपुर हाउस
थर्ड रोड, खार
मुम्बई-400 052

13. डॉ० भूपेन हज़ारिका
हृषीकेश अपार्टमेंट्स,
फ्लैट नं० 205, एफ बिल्डिंग, ए विंग
फर्स्ट क्रॉस लेन, लोखण्डवाला काम्प्लेक्स
स्वामी समर्थ नगर, अंधेरी वेस्ट
मुम्बई-400 053 (महाराष्ट्र)

14. सुश्री अन्जलि इला मेनन
8, शरीफ अपार्टमेंट्स
2, निज़ामुद्दीन ईस्ट
नई दिल्ली–110 003

15. श्रीमती सोनल मानसिंह
सी–304, डिफेंस कॉलोनी
नई दिल्ली–110 024

16. डॉ० के०जे० येसूदास
मकान नं० 36, फोर्थ वार्ड रोड
वाल्मिकी नगर,
तिरूवन्नियूर, चेन्नई

17. डॉ० एम० एस० स्वामिनाथन
11, रतन नगर, तेनमपेट,
चेन्नई–600 018

18. डॉ० वेदान्तम् सत्यनारायण सरमा
कुचीपुडि, 521136
कृष्णा जिला, आन्ध्र प्रदेश

19. प्रो०पी०वी०कृष्णा भट्ट
सदर्न रीजनल सेण्टर,
इ०गाँ०रा०क०केन्द्र,
109, ए०डी०ए० रंगमंदिर,
जे०सी० रोड़, बैंगलोर–560027

20. डॉ० सूर्यकान्त बाली
एन०डी०–23, विशाखा इन्क्लेव
पीतमपुरा – 34

21. डॉ० एन० आर० शेट्टि
एफ 111/143
खेल गाँव परिसर
नई दिल्ली–110 049

सदस्य सचिव

अनुबन्ध-2

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास की कार्यकारिणी के सदस्य

(31.3.2002)

1. डॉ० लक्ष्मीमल्ल सिंघवी — अध्यक्ष
   18, विलिंग्डन क्रिसेण्ट
   नई दिल्ली-110 001

2. श्री जगमोहन
   माननीय पर्यटन व संस्कृति मंत्री
   पर्यटन व संस्कृति मंत्रालय
   शास्त्री भवन, नई दिल्ली-110 001

3. श्री अनन्त कुमार
   माननीय शहरी विकास व गरीबी उन्मूलन मंत्री
   शहरी विकास व गरीबी उन्मूलन मंत्रालय
   निर्माण भवन, नई दिल्ली-110 001

4. श्री एम० वी० कामत
   कल्याणपुर हाउस
   थर्ड रोड, खार
   मुम्बई-400 052

5. श्रीमती सोनल मानसिंह
   सी-304, डिफेंस कॉलोनी
   नई दिल्ली-110 024

6. श्री पी० वी० कृष्णा भट्ट,
   सदर्न रीजनल सेण्टर,
   इ०गाँ०रा०क०केन्द्र,
   109, ए०डी०ए० रंगमन्दिर
   जे०सी०रोड़, बैंगलोर-560027

7. डॉ० एन० आर० शेट्टि — सदस्य सचिव
   एफ 111/143
   खेल गाँव परिसर, नई दिल्ली-110 049

अनुबन्ध-3

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अधिकारियों की सूची

(31.3.2002 तक)

डॉ० एन० आर० शेट्टि

सदस्य-सचिव

कलानिधि

1.	श्री ए०पी० गक्खर	उप-पुस्तकालयाध्यक्ष
2.	डॉ० सम्पत् नारायणन्	विशेषज्ञ
3.	श्री ऋषि पाल गुप्ता	मुख्य प्रशासनिक अधिकारी
4.	श्री आर० भरताद्रि	उपनिदेशक (मीडिया प्रोडक्शन)
5.	श्री प्रमोद किशन	अनुलिपिक अधिकारी
6.	श्री वीरेन्द्र बंगरू	प्रलेखन अधिकारी (स्लाइड्स)

कलाकोश मुख्यालय

1.	डॉ० एल०एम० गुजराल	अवैतनिक सलाहकार
2.	प्रो० एम०के० पालट	अवैतनिक सलाहकार
3.	डॉ० मधु खन्ना	एसोशिएट प्रोफेसर
4.	डॉ० एन०डी०शर्मा	वरिष्ठ अनुसन्धान अधिकारी
5.	डॉ० अद्वैतवादिनी कौल	सम्पादक
6.	डॉ० वी०एस० शुक्ल	अनुसन्धान अधिकारी
7.	डॉ० राधा बनर्जी	रिसर्च एसोशिएट

वाराणसी कार्यालय

8.	प्रो० वी०एन० मिश्र	अवैतनिक सलाहकार
9.	प्रो० आर०सी०शर्मा	अवैतनिक समन्वायक
10.	डॉ० सुकुमार चट्टोपाध्याय	वरिष्ठअनुसन्धान अधिकारी
11.	डॉ० नरसिंह चरण पण्डा	वरिष्ठ अनुसन्धान अधिकारी
12.	डॉ० उर्मिला शर्मा	अनुसन्धान अधिकारी

जनपद-सम्पदा

1.	श्री आर०सी० सहोत्रा	पीपीएस, जे एस विभाग
2.	डॉ०मौली कौशल	वरिष्ठअनुसन्धान अधिकारी
3.	डॉ० बंसीलाल मल्ला	रिसर्च एसोशिएट
4.	डॉ० नीता माथुर	रिसर्च एसोशिएट
5.	डॉ० रमाकर पंत	रिसर्च एसोशिएट

गुवाहाटी कार्यालय

6.	प्रो० ए०सी० भगबती	अवैतनिक समन्वायक

कलादर्शन

1.	श्री बसन्त कुमार	सलाहकार (क०द०)
2.	सुश्री सबीहा ज़ैदी	कार्यक्रम निदेशक

सूत्रधार

1.	श्री आर०के० चौबे	निदेशक (प्रशासन)
2.	श्री एस०एम० महाजन	मुख्य लेखा अधिकारी
3.	श्री संजय गोयल	निदेशक (मल्टीमीडिया)
4.	श्री टी० राजगोपालन	अवर सचिव (एस डी)
5.	श्री ओ०पी०शर्मा	अवर सचिव (आई डी/सी डी एन)
6.	श्रीमती नीलम गौतम	वरिष्ठ लेखा अधिकारी
7.	श्री जे०पी०एस० त्यागी	वरिष्ठ लेखा अधिकारी
8.	श्रीमती मंगलम् स्वामिनाथन	उप-निदेशक (आई एण्ड पी आर)
9.	श्री सुरेन्द्र कुमार अरोड़ा	पी०एस०

अनुबन्ध-4

31.03.2002

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में वरिष्ठ अनुसंधान अध्येताओं/ कनिष्ठ अनुसन्धान अध्येताओं की सूची

कलानिधि

1.	श्री जे० मोहन	वरिष्ठ माइक्रोफिल्मांकन सहयोगी (चेन्नई)
2.	श्री पी०पी० श्रीधर उपाध्याय	कनिष्ठ माइक्रोफिल्मांकन सहयोग(चेन्नई)
3.	श्रीमती वी० पार्वतन	कनिष्ठ माइक्रोफिल्मांकन सहयोगी (चेन्नई)

कलाकोश

1.	डॉ० सुधीर कुमार लाल	वरिष्ठ अनुसंधान सहायक
2.	डॉ० अजय कुमार मिश्र	वरिष्ठ अनुसंधान सहायक

जनपद-सम्पदा

1.	डॉ० कैलाश कुमार मिश्र	वरिष्ठ अनुसंधान सहायक

अनुबन्ध-5

अप्रैल, 2001 से मार्च, 2002 के दौरान केन्द्र में आयोजित व्याख्यान

क्र.म.	विषय	दिनाङ्क	वक्ता
1.	नैचुरल डाइज़: एन एक्स्पीरिएंशल जर्नी	19अप्रैल,2001	सुश्री हिमानी कपिला
2.	बिगेनिंग्स ऑफ कश्मीरी लैंग्वेज एण्ड लिटरेचर	25 अप्रैल, 2001	डॉ० एस०एस० तोशखानी
3.	डिस्-इंटीग्रेशन ऑफ वैल्यूज़	10 मई, 2001	डॉ० रजनी टण्डन
4.	लाइफ वर्क ऑफ प्रो०बी०सी०सान्याल	15 मई, 2001	प्रो०पी०एन०मागो
5.	नेशन-इन कथा: रीडिंग कन्टेम्पोरेरी मुस्लिम राइटर्स	31 मई, 2001	डॉ० सुधीर कुमार
6.	स्पिरिच्युअल जर्नी फ्रॉम इनसाइड द जेल	12 जून 2001	डॉ० किरण बेदी
7.	बियॉन्ड मास कम्यूनिकेशन: एन एजेंडा फॉर कम्यूनिकेशन स्टडीज इन इण्डिया	14 जून, 2001	प्रो० रमेश रॉव
8.	माया एंड एस्थेटिक इन काश्मीर शैविज़्म	18 जून, 2001	श्री वीरेन्द्र काज़ी
9.	ताल-वाद्य कचरी	20 जून, 2001	श्री पी० जया भास्कर
10.	अवुकाना इमेज एण्ड कॉलोसल इमेजिस इन श्रीलंका	12 जुलाई, 2001	महामहिम प्रो० सेनाके भंडारनायके
11.	मैथिली सीता का चित्र एक मैथिल की दृष्टि में	13 जुलाई, 2001	श्री कैलाश मिश्र
12.	एन एकाउंट ऑफ इंटरफेस बिट्वीन वेस्टर्न स्कॉलर्स एण्ड काश्मीरी स्कॉलर्स	20 जुलाई, 2001	श्री०एस०एन०पण्डिता

13.	द टेनेट्स अण्डर लाइंग हिंदूइज़्म एण्ड देअर वैलिडिटी	26 जुलाई, 2001	डॉ० विभाकर भट्टाचार्य
14.	शिव इन फोक एण्ड क्लासिकल नैरेटिव्स	8 अगस्त, 2001	प्रो०मौली कौशल
15.	रॉक आर्ट ऑफ ज़ांस्कर	13 अगस्त, 2001	सुश्री मार्टिन वर्नियर
16.	क्राफ्ट्स्मैनशिप ऑफ टेम्पल्स ऑफ शिमला डिस्ट्रिक्ट	23 अगस्त, 2001	श्री बी. एस. मलहंस
17.	इन्स्टॉलेशन परफॉरमेन्स	7 सितम्बर, 2001	श्रीमती रत्नाबली कांत
18.	द डीप पर्पल ऑफ लाइट थ्रू इंडियन स्कल्पचरल इथॉस	17 सितम्बर, 2001	डॉ अशोक त्रिख
19.	फंडामेंट्ल्स ऑफ भरतनाट्यम्	12 अक्तूबर, 2001	सुश्री नेहा चौधरी
20.	रोल ऑफ इंट्यूशन एण्ड इमोशन इन आर्ट	16 अक्तूबर, 2001	श्री मीर इम्तियाज़
21.	रिकंस्ट्रक्टिंग वॉयलेन्स द हिन्दू पर्सपेक्टिव	18 अक्तूबर, 2001	डॉ० मधु खन्ना
22.	अण्डरस्टैंडिग इस्लाम	30 अक्तूबर, 2001	डॉ० शबी अहमद
23.	धारणी मन्त्र	29 नवम्बर, 2001	डॉ सत्य प्रकाश शर्मा
24.	उदय शंकर : अर्ली इयर्स इन लंदन	12 दिसम्बर, 2001	श्रीमती अम्ला शंकर
25.	उदय शंकर : डाउन मेमोरी लेन	18 दिसम्बर, 2001	उदय शंकर के सहयोगी व प्रशंसक
26.	उदय शंकर : द जर्मन कनेक्शन	19 दिसम्बर, 2001	श्रीमती ज़ोहरा सहगल
27.	उदय शंकर : एन इंडियन इन अमेरिका	20 दिसम्बर, 2001	डॉ. (श्रीमती) विशाखा देसाई
28.	देव दासी मुरै	11 जनवरी, 2001	श्रीमती पद्मा संपत् कुमारन्

29.	**हर्मिटाज एज़ एलिमेंट ऑफ रशियन कल्चर**	27 फरवरी, 2002	डॉ०मिखाइल बोरिसोरिच पिट्रोवस्की
30.	**ऑरल आर्टस एक्रॉस कल्चर**	7 मार्च, 2002	प्रो. टिम हॉफमैन
31.	**मृदंग : अवंछिद वाद्य फ्रॉम एंशियेंट टाइम्स टु प्रेजेंट डे**	20 मार्च, 2002	श्रीमती श्रीजंथी गोपाल

अप्रैल, 2001 से मार्च, 2002 तक प्रकाशित इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की पुस्तकें:-

कलातत्त्वकोश, खण्ड-1 पर्वेसिव टर्म्स-व्याप्ति

इस प्रारम्भिक खण्ड में निम्नलिखित आठ व्याप्तिपरक व सनातन संकल्पनाओं पर महत्त्वपूर्ण लेख हैं- ब्रह्म, पुरुष, आत्मा, शरीर, प्राण, बीज, लक्षण, व शिल्प।

लेखक हैं- प्रेमलता शर्मा, एच०एन० चक्रवर्ती, के०डी०त्रिपाठी, आर० एन० मिश्र० व बेट्टिना बॉमर। सम्पादक- बेट्टिना बॉमर

द चित्रसूत्र ऑफ द विष्णुधर्मोत्तर पुराण

विष्णुधर्मोत्तर पुराण के तृतीय काण्ड के अध्याय 35-43 तक का भाग चित्रसूत्र है । अग्नि, विष्णु, मत्स्य व मार्कण्डेय आदि पुराण, विधि-विधानपरक तथा कलाविशेष से सम्बद्ध ग्रन्थों के मध्य सेतु का कार्य करते हैं।

उपपुराणों व पुराणान्तर्गत संबद्ध प्रोक्तियों में विष्णुधर्मोत्तर-पुराण का स्थान मूर्धन्य है। साथ ही, अपने पूर्ववर्ती व उत्तरवर्ती कलापरक संवाद में यह केन्द्रबिन्दु के समान है। या तो इस विशालकाय ग्रन्थ का अध्ययन पुराणों के संरचनात्मक स्वरूप के परिप्रेक्ष्य में होना चाहिए अथवा इसे, अपने तृतीय काण्ड के माध्यम से; नाट्यशास्त्र से लेकर मध्यकालीन ग्रंथों तक के कलापरक संवाद की मुख्यधारा में रखा जाना चाहिए। इसकी विषय-वस्तु का पूर्व व उत्तरवर्ती ग्रन्थों के साथ अच्छा तुलनात्मक अध्ययन हो सकता है।

कला की प्रकृति, अभिव्यक्ति व संवाद तथा कलाओं के मध्य व कलाओं में परस्पर एक सार्थक अन्योन्याश्रय और अन्तसम्बन्ध की स्थापना की आवश्यकला पर बल देने रूपी, विष्णु-धर्मोत्तर-पुराण के दोनों विशद परिप्रेक्ष्यों में, चित्रसूत्र एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

संपादक एवं अनुवादक:- पारूल दवे मुखर्जी

द पुष्पसूत्रः ए प्रातिशाख्य ऑफ द सामवेद

सामवेद की कौथुम और राणायनीय शाखाओं से सम्बद्ध पुष्पसूत्र एक प्रमुख शास्त्रीय एवं सहायक ग्रन्थ है। यह साम गायन एवं उनकी संरचनाओं से सम्बद्ध है। प्रस्तुत सन्दर्भ में, पुष्प शब्द,उस वर्णात्मक विस्तृति का वाचक है जब पद्य से संगीत की रचना होने लगी थी। साम-गायन के लिखे जाने के भी बहुत समय के उपरान्त पुष्पसूत्र लिखा गया।

पुष्पसूत्र का तिथि-निर्धारण कठिन है। इसमें, मूल में विकल्प, अवशिष्ट भाव, प्रस्तावों का विस्तृत विवरण तथा प्रथम दो प्रपाठक जोड़े गए हैं। साम-गायन के अध्येताओं के लिए इसका यह दश-प्रपाठकीय रूप बहुत उपयोगी है।

यह संस्करण साम-गायन परम्परा के एक प्रातिभ विद्वान् प्रो० जी० एच० तरलेकर द्वारा सम्पादित है। इसमें उन्होंने शुद्ध संस्कृत पाठ में सूत्र रूप में जटिलतापूर्वक ग्रथित सभी सूक्ष्म तत्त्वों को सटीक अंग्रेजी में व्याख्यायित किया है। यह इस महत्वपूर्ण सामवेदीय ग्रन्थ का प्रथम अंग्रेजी संस्करण है।

संपादक एवं अनुवादक:- जी०एच०तरलेकर

ए बिब्लियॉग्राफी ऑफ आनन्द केन्टिश कुमारस्वामी

इ०गाँ०रा०क० केन्द्र के० कुमारस्वामी ग्रन्थमाला के प्रकाशन कार्यक्रम के अन्तर्गत यह इस ग्रंथमाला का 14 वाँ खण्ड है उसमें, बीसवीं शताब्दी के महान् चिन्तकों में अन्यतम इस विद्वान् के अनुपम वैदुष्य का सुष्ठु अभिलेखन किया गया है। यह विस्तृत एवं सटीक बिब्लियॉग्राफी बीस वर्षों से भी अधिक के वैदुष्यपूर्ण अनुसन्धान का प्रतिफल है। भारतीय कला व धर्म के सभी विद्वानों के लिए यह प्रकाशन अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। साथ ही, तुलनात्मक धर्मशास्त्र, मिथकों, परम्परावादी अध्यात्म, मूर्तिलक्षणविज्ञान तथा प्रतीकविद्या पर किसी भी अध्येता के लिए यह एक बहुमूल्य सन्दर्भ ग्रन्थ है। इसमें कुमारस्वामी द्वारा लिखी गई 95 पुस्तकों एवं प्रपत्रों के प्रथम अमेरिकन, अंग्रेजी व भारतीय संस्करणों का विस्तृत विवरण; पत्रिकाओं तथा समाचार-पत्रों में उनके योगदानों का विवरण देने वाली 96 पुस्तकों (तथा उनके लेखों के अनुवादों का भी) विवरण है। कुमारस्वामी की पुस्तकों की ४२० समीक्षाओं तथा उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से सम्बद्ध 216 अन्य लेख भी इसमें सम्मिलित हैं। सभी प्रविष्टियाँ सटिप्पणीक हैं और एक विस्तृत अनुक्रमणी भी दी गई है।

संकलनकर्त्ता:- जेम्स एस० काउच

स्तूप एण्ड इट्स टेक्नॉलॉजी: ए तिबेतो-बुद्धिस्ट पर्सपेक्टिव

विश्व के सभी धार्मिक भवनों में स्तूप का ऐतिहासिक विकास क्रम सर्वाधिक निर्बाध रहा है । अपने भारतीय मूलादर्श के बाबजूद स्तूप-स्थापत्य उन सभी देशों में विकसित हुआ, जहाँ बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार हुआ। समय के साथ-साथ, भारत व अन्य एशियाई बौद्ध देशों में स्तूप के संरचनात्मक स्वरूप में महत्वपूर्ण संशोधन हुए।

प्रस्तुत अध्ययन में, स्तूप-स्थापत्य के महत्वपूर्ण ग्रन्थों को रेखांकित करते हुए यह दर्शाया गया है कि कैसे तिब्बत बौद्ध संस्कृति की एक शेवधि के रूप में विकसित हुआ। इसमें तिब्बती-बौद्ध स्तूप के आठ मूल प्रकारों तथा उनके मूल संरचनात्मक उपादानों सहित, उनकी निर्माण विधि से जुड़े विभिन्न संस्कारों का भी वर्णन किया गया है। चार महत्वपूर्ण तिब्बती ग्रंथों के अंग्रेजी अनुवाद एवं लिप्यन्तरण पुस्तक को और भी महत्वपूर्ण बनाते हैं।

पेमा दोरजी

रॉक आर्ट इन द ओल्ड वर्ल्ड

इ०गा०रा०क०केन्द्र की शैल कला श्रृंखला का यह प्रथम प्रकाशन है। इसमें 1988 में डार्विन में आयोजित विश्व शैल-कला सम्मेलन के चुने हुए लेख संकलित हैं। ये लेख; पुरातत्त्वशास्त्र, नृजाति-विषयक तथा जीवन-शैली अध्ययन के महत्त्व को विश्वसनीय रूप से रेखांकित करते हैं। यद्यपि शैल कला पर अनुसन्धान का अपना एक इतिहास है,इन लेखों का विस्तार एक नूतन अनुशासन के रूप में इसके बहुमुखी विकास पर प्रकाश डालता है। इनमें से कुछ लेख, भारत में इस क्षेत्र में हुई व्यापक गवेषणा को इंगित करते हैं।

संपादक: माइकल लॉरब्लांशे

द आइकोनॉग्राफी ऑफ द बृहदीश्वर टेम्पल

इकोल फ्रैंकेस द एक्स्ट्रीम-ओरियॅन्त (इ एफ इ ओ), पाण्डिचेरी के संयुक्त तत्त्वावधान में इ०गा०रा०क० केन्द्र ने, तंजावुर के बृहदीश्वर मंदिर के बहुविध एवं बहुमुखी स्वरूप के अनुसन्धान की एक व्यापक परियोजना बनाई। इस परिलक्षित क्षेत्र एवं भवन के गहन अध्ययन के परिणामस्वरूप, 1995 में पिएर पिशार्ड द्वारा तंजावुर बृहदीश्वर: एन आर्किटेक्चरल स्टडी का प्रकाशन हुआ। डॉ० आर० नागस्वामी ने इसी परियोजना के एक उपखण्ड के अन्तर्गत, मूर्त्तियों, प्रस्तर-खण्डों कांस्य प्रतिमाओं तथा भित्ति-चित्रों के मूर्त्तिलक्षणपरक अध्ययन का समन्वायन किया है। तदनुरूप, इ एफ इ ओ की डॉ० फ्रांसुआ ल% आर्नाल्ट ने बृहदीश्वर मंदिर की प्रतिमाओं का छाया-अभिलेखन किया है। उन्होंने 1994 में यह अध्ययन पूरा किया जो लगभग 600 प्रतिमाओं पर आधारित है। चोल साम्राज्य दो राजधानियों तंजावुर व गंगैकोण्डाचोलपुरम् की प्रतिमालक्षणपरक स्वरूपों के अभिचिह्नित करने के लिए उन्होंने यह मोनोग्राफ एक सूचीपत्र (कैटलॉग) के रूप में तैयार किया है।

संपादक:- ललित एम० गुजराल

संथाल वर्ल्डव्यू

यह भारतीय उपमहाद्वीप के पूर्वी भाग के एक प्रमुख जनजाति समूह संथालों की संस्कृति एवं जीवनशैली से सबंद्ध है। संथालों की निम्नलिखित संकल्पनाओं से संबंधित सोलह निबंध यहाँ संग्रहीत हैं-

देह, गर्भ एवं बीज; ध्वनि-प्रतीक; लिपि निर्माण एवं प्रसार; व्यक्ति एवं पशु का अन्तस्सम्बन्ध; भोजन एवं पाक-प्रणाली; उपचार-पद्धतियाँ; धार्मिक विश्वास एवं उत्सव; समीक्षा एवं व्याख्या की विशेष संरचना में इतर विश्व की परिकल्पना। स्वयं संथाल बुद्धिजीवियों द्वारा किया गया अपना सांस्कृतिक आत्मावलोकन, इस ग्रन्थ को अधिक महत्व प्रदान करता है।

संपादक: नीता माथुर

चैन्टेड नैरेटिव्स: द लिविंग ꠸कथा वाचन꠸ ट्रेडीशन

मौखिक सृजनात्मकता में विश्व के हर समुदाय/प्रदेश का न्यूनाधिक योगदान रहा है। परिणामत: ꠸मौखिक काव्यों꠸की सबकी अपनी विरासत भी है- महाकाव्यात्मकपरक, ऐतिहासिक, मिथपरक, भावपरक और यहाँ तक कि कर्म-काण्डपरक भी। यह विरासत इन लोगों की सामूहिक स्मृति में विद्यमान रही और पीढ़ी दर-पीढ़ी हस्तांतरित भी होती गई। आज के जीवन के बहुमुखी तकनीक-अभिकेन्द्रण के चलते और कई अन्य जीवन्त सांस्कृतिक उपादानों की भाँति, मौखिक महाकाव्य भी सर्वत्र लुप्तप्राय हो रहे हैं।

मानव-सभ्यता की इस अमूर्त धरोहर के संरक्षण की आवश्यकता को रेखांकित करने वाले इस ग्रन्थ में, भारत के विभिन्न प्रांतों सहित दक्षिण-पूर्व एशिया के कई भागों के विभिन्न प्रदेशों के मौखिक महाकाव्यों का रोचक अध्ययन किया गया है। मौखिक की प्रकृति और रचना, प्रदर्शन, प्रसारण व दर्शकों आदि सम्बद्ध विषयों की गवेषणा करने वाली यह कृति अनिवार्यत: एक बहु-लेखकीय प्रयास है। वर्तमान परिभाषाओं और शब्दावलियों से सम्बद्ध प्रविधिपरक विषयों को सम्बोधित करते हुए, लेखक मौखिकता व मौखिक संस्कृति पर चल रही शैक्षणिक चर्चा में परिवर्तन की वकालत करते हैं।

इटली, इन्डोनेशिया, जर्मनी, नेपाल, न्यूज़ीलैण्ड, फ्रांस, भारत व यू०के० आदि चौबीस देशों के लेखों से युक्त, यह पुस्तक न केवल मौखिकता की जटिल प्रकृति हेतु सैद्धान्तिक अन्तर्दृष्टि उपलब्ध करवाती है अपितु मौखिक आख्यानों का एक समृद्ध कोश भी प्रस्तुत करती है।

संपादक:- मौली कौशल

द आइकॉनॉग्राफी ऑफ अवलोकितेश्वर इन मेनलैण्ड साउथ-ईस्ट एशिया

यह पुस्तक, एशिया की सर्वाधिक प्रिय धार्मिक आकृतियों में अन्यतम (अवलोकितेश्वर) की अवधारणा व संरचना पर लेखक के आजीवन अध्ययन का प्रतिफल है। यह अभिलेखीय और अन्य पुरातात्त्विक साक्ष्यों से गृहीत व्यापक डेटा पर आधारित है।

यह पुस्तक प्राचीन दक्षिण पूर्व एशिया के उस धार्मिक जीवन हेतु गहन अन्तर्दृष्टि प्रस्तुत करती है जिसने करुणा की साक्षात् बौद्ध मूर्ति अवलोकितेश्वर को श्रद्धेय बनाने की पृष्ठभूमि प्रदान की । हर समुदाय के आध्यात्मिक दायित्वों व सौन्दर्यशास्त्रीय इच्छाओं की प्रतिपूर्त्ति हेतु, उन्हें आश्चर्यजनक विविध रूपों में दर्शया गया है जिससे आयातित नियमों का स्थानीय रूपान्तरण साफ झलकता है। उनके प्रतिमालक्षणपरक विवरण प्रतीकात्मक रूप से धार्मिक विचारों, मानवीय आशा, मूलभूत आवश्यकताओं व पूर्ण विश्वास की एक श्रृंखला के सूचक हैं। उनके शैलीगत अभिलक्षण मानवीय कलापरक उपलब्धि केमानदण्डों के प्रकाशक है साथ ही एक ही विश्वास व आस्था से संयुक्त विभिन्न साँस्कृतिक व सामाजिक पृष्ठभूमियों के समाजों के मध्य धार्मिक विचलनों के भी सूचक हैं।

नन्दना चुटिवोंग्स